राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय
दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण शनिवार 12 सितंबर 2026 वर्ष-9,अंक-221 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पहला कॉलम

पीएम मोदी ने साझा किया संस्कृत श्लोक, सकारात्मक वैश्विक चर्चाओं का आह्वान

नई दिल्ली ।

आगामी ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वैश्विक कल्याण के लिए सकारात्मक और सार्थक चर्चाओं की उम्मीद जारी है। शुक्रवार को एक पोस्ट के जरिए उन्होंने एक संस्कृत सुभाषितम् भी साझा किया, जिसमें अच्छे लोगों के साथ संगति और संवाद पर जोर दिया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि अगले कुछ दिनों में दुनिया के कई देशों के नेता उच्चस्तरीय बैठक के लिए नई दिल्ली में जुटने वाले है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह सम्मेलन दुनिया के समक्ष मौजूद विभिन्न वैश्विक मुद्दों पर विचार-विमर्श का महत्वपूर्ण मंच साबित होगा। पीएम मोदी ने जो श्लोक साझा किया, वहां हैं सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम। सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किंचिदाचरेत॥ यह संदेश अच्छे साथियों के साथ मिलकर समस्याओं का समाधान खोजने की भारतीय परंपरा को दिखाता है।

इस बीच,रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए शुक्रवार सुबह नई दिल्ली पहुँचे। फरवरी 2022 में यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद रूस के बाहर किसी ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में यह उनकी पहली व्यक्तिगत भागीदारी है, जो बैठक को और महत्वपूर्ण बनाती है। उनके आगमन के कुछ ही घंटों बाद प्रधानमंत्री मोदी के साथ उनकी द्विपक्षीय बैठक होने की संभावना है, जिसमें रक्षा और अन्य संबंधित मामलों पर चर्चा होने की उम्मीद है।

विदेश मंत्रालय ने पुष्टि की है कि राष्ट्रपति पुतिन के अलावा, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग, मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सिसी, इथियोपिया के प्रधानमंत्री अबिय अहमद अली और इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्राबोवो सुबियांतो जैसे प्रमुख नेता भी इस समिट के लिए दिल्ली पहुंच रहे है। यह शिखर सम्मेलन तब हो रहा है जब पश्चिम

एशिया और यूक्रेन में जारी युद्धों के कारण वैश्विक ऊर्जा और कृषि आपूर्ति श्रृंखलाओं में गंभीर संकट पैदा हो गया है, जिससे सभी सदस्य देशों के बीच सहयोग की आवश्यकता बढ़ गई है।

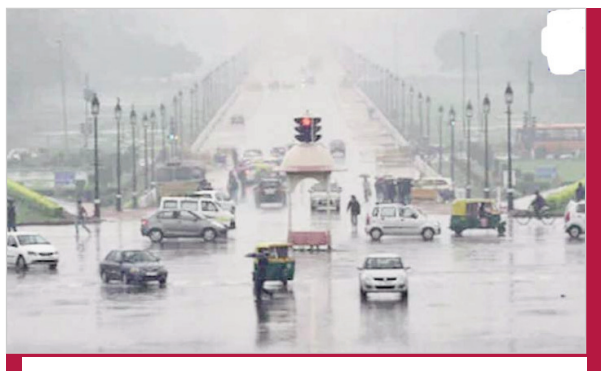

देश के कई राज्यों में भारी बारिश की चेतावनी, तेज हवाएं चलने की आशंका

बंगाल, ओडिशा और आंध्र प्रदेश में मछुआरों को समुद्र में न जाने की सलाह

नई दिल्ली।

भारत मौसम विज्ञान विभाग की ओर से मौसम का अपडेट जारी किया गया है। उत्तर-पश्चिम बंगाल की खाड़ी और आसपास के इलाकों में बना कम दबाव का क्षेत्र अब उत्तर-पश्चिम और पश्चिम-मध्य बंगाल की खाड़ी और उससे सटे दक्षिण ओडिशा-उत्तरी आंध्र प्रदेश के तटों पर स्थित है, जिसकी वजह से ऋवाती परिसंचरण समुद्र तल से 7.6 किमी की ऊंचाई तक फैला हुआ है और ऊंचाई के साथ दक्षिण-पश्चिम की ओर झुका हुआ है। आईएमडी के मुताबिक अगले 48 घंटों में उत्तर बंगाल की खाड़ी और मध्य बंगाल की खाड़ी में; और बांग्लादेश-पश्चिम बंगाल-ओडिशा-उत्तरी आंध्र प्रदेश के तटों के साथ और उनसे दूर 40-50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चलने की आशंका जताई जा रही है। स्थिति में उत्तर बंगाल की खाड़ी और मध्य बंगाल की खाड़ी और बांग्लादेश-पश्चिम बंगाल-ओडिशा-उत्तरी आंध्र प्रदेश के तटों पर मछुआरों को नहीं जाने की सलाह दी गई है। वहीं, ओडिशा के में हल्की बारिश और कुछ स्थानों पर बहुत भारी बारिश होने की संभावना है। गंगा के मैदानी इलाकों वाले पश्चिम बंगाल में कई जगहों पर हल्की और कुछ स्थानों पर भारी बारिश हो सकती है। छत्तीसगढ़ में भी इस तरह की बारिश की आशंका है। आंध्र प्रदेश में शुक्रवार को ज्यादातर स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश और कुछ स्थानों पर भारी से बहुत भारी बारिश होने की आशंका है। कुछ ऐसी ही स्थिति तेलंगाना की रहेगी। मध्य प्रदेश में भी शुक्रवार को ज्यादातर स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश और कुछ स्थानों पर भारी बारिश होने की आशंका है।

ब्रिक्स में पीयूष गोयल की अपील, सदस्य देश एक-दूसरे के लिए खोलें बाजार

गैर-टैरिफ बाधाएं घटाने और भुगतान प्रणालियों को जोड़ने पर जोर, मजबूत आपूर्ति श्रृंखला के लिए गहरे आर्थिक एकीकरण की पैरवी

नई दिल्ली ।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को ब्रिक्स व्यापार मंच के दौरान सदस्य और साझेदार देशों से एक-दूसरे के लिए अपने बाजार अधिक खुले बनाने की अपील की। उन्होंने व्यापार में आने वाली गैर-टैरिफ बाधाओं को कम करने, नियामक प्रक्रियाओं को आसान बनाने और विभिन्न देशों की भुगतान प्रणालियों को आपस में जोड़ने की जरूरत बताई।गोयल ने कहा कि ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार अधिक गहरा और लचीला होना चाहिए। आपूर्ति श्रृंखलाएं दोनों दिशाओं में निर्बाध रूप से चलें और संरक्षणवादी बाधाओं से प्रभावित न हों। उन्होंने कहा कि व्यापार आर्थिक विकास और सदस्य देशों के लोगों की खुशहाली का महत्वपूर्ण माध्यम बनना चाहिए। गोयल ने ब्रिक्स देशों से एक-दूसरे के उत्पादों के लिए बाजार तक आसान पहुंच उपलब्ध कराने का आग्रह किया। इसमें कच्चे माल और महत्वपूर्ण खनिज भी शामिल हैं। उनका कहना है कि बाजारों में पहुंच आसान होने से सदस्य देशों के बीच व्यापार और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा मिलेगा। मंत्री ने सीमा शुल्क की प्रक्रिया को तेज करने और नियामक नियमों को सरल बनाने पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि गैर-टैरिफ बाधाएं व्यापार के रास्ते में बड़ी चुनौती हैं और कई मामलों में इनसे होने वाली अतिरिक्त लागत शुल्क से भी ज्यादा हो सकती है। भुगतान प्रणालियों को जोड़ने पर जोर ब्रिक्स देशों के बीच आर्थिक एकीकरण को मजबूत करने के लिए भुगतान प्रणालियों को आपस में जोड़ने की जरूरत पर भी गोयल ने जोर दिया। उनका मानना है कि इससे सीमा पार लेनदेन को आसान बनाने और व्यापार की लागत व समय घटाने में मदद मिल सकती है। मजबूत आपूर्ति श्रृंखला पर फोकस गोयल ने कहा कि मौजूदा वैश्विक अर्थव्यवस्था में आपूर्ति श्रृंखलाओं को अधिक लचीला बनाना जरूरी है। ब्रिक्स देश आपसी आर्थिक सहयोग बढ़ाकर वैश्विक स्तर पर उत्पन्न होने वाली अनिश्चितताओं और व्यापार के बढ़ते विखंडन का सामना कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि ब्रिक्स देशों को ऐसा कारोबारी माहौल तैयार करना चाहिए, जहां कंपनियों को नए साझेदार और बाजार मिलें तथा व्यापार और निवेश का प्रवाह अधिक सुगम हो। ब्रिक्स में वैश्विक अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा गोयल के मुताबिक ब्रिक्स देश वैश्विक व्यापार में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी रखते हैं और दुनिया की बड़ी आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसे में समूह के भीतर आर्थिक संबंधों को मजबूत करने की काफी संभावनाएं हैं।

सभी निर्भीक होकर अपने मताधिकार का प्रयोग करे-राज्यपाल

जयपुर ।

राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागडे ने शुक्रवार को नगर निकाय आम चुनाव में अपना मतदान किया। राज्यपाल ने प्रातः 10.40 बजे केशवनगर सामुदायिक भवन, हॉल लेफ्ट स्थित मतदान भवन पर पहुंचकर अपना मतदान किया।राज्यपाल ने कहा कि मतदान लोकतंत्र का पावन अवसर है । उन्होंने नगर निकाय आम चुनाव में मतदाताओं को भयमुक्त होकर अपने मताधिकार का प्रयोग करने की अपील भी की। उन्होंने मतदान में अधिकाधिक भागीदारी का आह्वान किया।

अगर ममता नंदीग्राम से उपचुनाव में उतरती हैं तो उनके खिलाफ उम्मीदवार नहीं उतारेंगे

टीएमसी के बागी गुट ने पार्टी प्रमुख ममता को चुनाव लड़ने का दिया खुला ऑफर

कोलकाता।

पश्चिम बंगाल में नंदीग्राम और रेजीनगर विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव को लेकर सियासत गरमा गई है। टीएमसी के बागी गुट ने पार्टी प्रमुख ममता बनर्जी को नंदीग्राम सीट से चुनाव लड़ने का खुला ऑफर दिया है। ऋतब्रत बनर्जी की अगुवाई वाले तृणमूल खेमे के नेता मदन मित्रा ने कहा कि अगर ममता बनर्जी नंदीग्राम से मैदान में उतरती हैं तो उनके खिलाफ कोई उम्मीदवार नहीं उतारा जाएगा।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक नंदीग्राम विधानसभा सीट से ममता बनर्जी 2021 में विधानसभा चुनाव लड़ चुकी हैं, लेकिन उन्हें जीत नहीं मिली थी और वे बीजेपी के उम्मीदवार शुभेंदु अधिकारी से हार गई थीं। इसके बाद 2026 के विधानसभा चुनाव में शुभेंदु अधिकारी ने ममता बनर्जी को उनके गढ़ भवानीपुर में भी हरा दिया। शुभेंदु इस बार नंदीग्राम और भवानीपुर दोनों ही विधानसभा सीटों से चुनाव जीते थे, जिसके बाद उन्होंने नंदीग्राम सीट छोड़ दी। अब नंदीग्राम सीट पर उपचुनाव हो रहे हैं। ममता बनर्जी को टीएमसी के बागी गुट ने खुला ऑफर दिया है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या ममता बनर्जी नंदीग्राम सीट से चुनावी मैदान में उतरेंगी? रिपोर्ट के मुताबिक पश्चिम बंगाल की सत्ता से बाहर होते ही तृणमूल कांग्रेस तीन धड़ों में बंट गई है। ऋतब्रत खेमे ने टीएमसी विधायकों को अपने साथ मिलाकर पार्टी पर कब्जा जमा रखा है, जिसे लेकर ममता का मामला कोर्ट में चल रहा है। ऋतब्रत गुट के नेता मदन मित्रा ने कहा है कि अगर ममता बनर्जी खुद नंदीग्राम से चुनाव लड़ती हैं, तो वे उम्मीदवार नहीं उतारेंगे। इसके साथ ही नंदीग्राम के एक अन्य नेता अबू ताहेर ने भी यही बात कही है।

मित्रा ने कहा कि इस फैसले का मकसद बीजेपी विरोधी वोटों के बंटवारे को रोकना और ममता

को नंदीग्राम में आसानी से जीत दिलाना है। मित्रा ने कहा कि इससे यह साबित होगा कि हम बीजेपी को विपक्ष के वोट बांटने का मौका नहीं देना चाहते। उन्होंने यह बात उस आरोप के संदर्भ में कही जिसमें बागी गुट को बीजेपी की बी-टीम बताया जा रहा है।

बजट का समयबद्ध उपयोग करें-श्रीनिवास

जयपुर ।

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने शासन सचिवालय में पीएम राष्ट्रीय कृषि विकास योजना की प्रदेश में कार्य प्रगति की समीक्षा की। बैठक में योजना के विभिन्न कंपोनेंट के तहत संचालित कार्यों एवं उनकी प्रगति की विस्तार से समीक्षा की गई।मुख्य सचिव ने योजना के तहत हो रही प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि प्रदेश में योजना के सभी कंपोनेंट का बेहतर क्रियान्वयन किया जा रहा है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को कार्यों की लगातार मॉनिटरिंग करते हुए योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के निर्देश दिए।कृषि एवं उद्यानिकी विभाग की प्रमुख शासन सचिव श्रीमती मंजू राजपाल ने अधिकारियों को योजना के लिए आवंटित बजट का निर्धारित समयावधि में उपयोग सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बजट का समय पर उपयोग होने से योजनाओं के कार्यों को गति मिलेगी और किसानों को इनका लाभ समय पर उपलब्ध कराया जा सकेगा।

आत्मीय स्वागत से गदगद दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रपति रामाफोसा,मेहमानों का आना जारी

-दिल्ली वर्तमान में ग्लोबल डिप्लोमेसी की सबसे बड़ी धुरी

नई दिल्ली ।

नई दिल्ली वैश्विक कूटनीति के एक महत्वपूर्ण अध्याय की साक्षी बनने वाली है, जहाँ आगामी 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन 2026 के लिए दुनिया भर के राष्ट्राध्यक्षों और शीर्ष राजनयिकों का आगमन जारी है। दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा का पालम एयरबेस पर उतरते ही भारतीय परंपरा के अनुसार भव्य स्वागत हुआ। केंद्रीय राज्य मंत्री जयंत चौधरी से हाथ मिलाते ही राष्ट्रपति के चेहरे पर सहज मुस्कान दिखाई दी। यह क्षण भारत और दक्षिण अफ्रीका के ऐतिहासिक, अटूट और भावनात्मक रिश्तों की सबसे ताजा तस्वीर है। 12 और 13 सितंबर को होने वाले दो दिवसीय महासम्मेलन के लिए दिग्गजों का तांता लगा हुआ है। ब्रिक्स के संस्थापक सदस्य दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति रामाफोसा के साथ, युगांडा की उपराष्ट्रपति जेसिका अलूपो भी राजधानी दिल्ली पहुँचीं। कौशल विकास और उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जयंत चौधरी ने दोनों प्रतिष्ठित अतिथियों का भारत की ओर से आत्मीय स्वागत किया। उरुग्वे के विदेश मंत्री मारियो लुबेटकिन, नाइजीरिया के विदेश मंत्री बियांका और फिलीपींस के विदेश सचिव मारिया थेरेसा पी लाज़ारो भी अहम आयोजन में शामिल होने पहुँच चुके हैं। ब्रिक्स अब केवल पाँच अक्षरों तक सीमित नहीं, बल्कि मिस्र, इथियोपिया, इंडोनेशिया, ईरान, सऊदी अरब और यूएई के जुड़ने के बाद 11 देशों का विशाल आर्थिक मंच बन चुका है।

देश की राजधानी दिल्ली वर्तमान में ग्लोबल डिप्लोमेसी की सबसे बड़ी धुरी है। भारत ने इस बार शिखर सम्मेलन की जो थीम तय की है, वह लचीलापन, नवाचार, सहयोग और स्थिरता के लिए

निर्माण है, जो वर्तमान वैश्विक हालात को देखकर बेहद प्रासंगिक है। भारत की अध्यक्षता के तीन प्रमुख राजनीतिक स्तंभ तय किए गए हैं.....ग्लोबल साउथ की आवाज को बुलंदी देना-यानी विकासशील और अविकसित देशों के आर्थिक व सामाजिक हितों को वैश्विक मंचों पर प्रमुखता से उठाना।

राजस्थान नगर निकाय चुनाव के पहले चरण में हुआ 76.41 फीसदी मतदान

दूसरे चरण का मतदान आज, 14 सितंबर को होगी मतगणना

जयपुर।

राजस्थान में नगर निकाय चुनाव के पहले चरण में कुल 76.41 फीसदी मतदान हुआ। अधिकारियों के मुताबिक प्रतापगढ़ जिले की अरनोद नगर पालिका में सबसे ज्यादा 91.98 फीसदी जबकि भीलवाड़ा नगरपालिका में सबसे कम 63.68 फीसदी मतदान हुआ। राज्य के कुल 309 में से 162 नगर निकायों में बुधवार को मतदान हुआ। इनमें चार नगर निगम, 27 नगर परिषद और 131 नगर पालिकाएं शामिल हैं। बाकी बचे निकायों में शुक्रवार को मतदान होगा। मतगणना 14 सितंबर को होगी। राज्य निर्वाचन आयोग के मुताबिक राज्य के

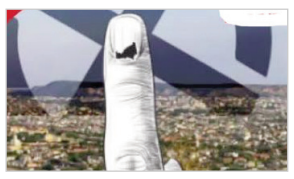

5393 वार्ड में पार्षद के लिए बुधवार को हुए मतदान में कुल 57.52 लाख से ज्यादा मतदाताओं में से करीब 43.95 लाख मतदाताओं ने वोट डाले और कुल मत प्रतिशत 76.41 फीसदी रहा। इस चरण में 20 हजार से ज्यादा उम्मीदवार अपना चुनावी भाग्य आजमा रहे हैं। मतदान में कई स्थानों पर झड़प, फर्जी मतदान और ईवीएम में गड़बड़ी की घटनाएं सामने आईं हैं।

मप्र के नीमच में सीबीआई की बड़ी कार्रवाई, नारकोटिक्स अधिकारी के घर छापा

ड्रग्स जब्ती मामले को निपटाने के लिए 50 लाख रुपये के संदिग्ध लेनदेन की जांच, लैपटॉप-फोन समेत दस्तावेज खंगाले

नीमच ।

मादक पदार्थों की तस्करी और जब्त ड्रग्स से जुड़े एक संवेदनशील मामले में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने नीमच में बड़ी कार्रवाई की है। गुरुवार देर शाम सीबीआई की टीम ने केंद्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो (सीबीएन) की कॉलोनी पहुंचकर एक वरिष्ठ अधिकारी के सरकारी आवास की तलाशी ली। कार्रवाई देर रात तक जारी रही।

सूत्रों के अनुसार, सीबीआई को ड्रग्स जब्ती से जुड़े मामले को कथित तौर पर दबाने और उसे निपटाने के एवज में करीब 50 लाख रुपये के संदिग्ध ऑनलाइन लेनदेन के सुराग मिले थे। जांच में सामने आया है कि कथित रकम सीधे अधिकारी के बैंक खाते में भेजने के बजाय उनके एक करीबी रिश्तेदार के खाते में ट्रांसफर की गई थी। इसी वित्तीय लेनदेन से जुड़े डिजिटल साक्ष्यों के आधार पर सीबीआई ने यह कार्रवाई की।

दस्तावेज और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की जांच

सीबीआई अधिकारियों ने अधिकारी के सरकारी आवास में ड्रग्स जब्ती से संबंधित रिकॉर्ड, पुराने मामलों की फाइलें और जब्ती सूचियों की जांच की। इसके अलावा संदिग्ध बैंक खातों, ऑनलाइन लेनदेन से जुड़े दस्तावेज और अन्य डिजिटल साक्ष्यों को भी खंगाला गया।

तलाशी के दौरान अधिकारी के लैपटॉप, स्मार्टफोन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी जांच के दायरे में आए हैं। इन उपकरणों से संबंधित डेटा की पड़ताल की जा रही है, ताकि संदिग्ध वित्तीय लेनदेन और ड्रग्स जब्ती मामले के बीच किसी संभावित कड़ी का पता लगाया जा सके।

कार्रवाई से नारकोटिक्स विभाग में हड़कंप

सीबीआई की अचानक हुई कार्रवाई के बाद केंद्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो के अधिकारियों और कर्मचारियों में हलचल बढ़ गई है। जांच की आंच आगे और किन अधिकारियों या लोगों तक पहुंचती है, इसे लेकर भी चर्चाएं तेज हैं।

फिलहाल सीबीआई की ओर से कार्रवाई को लेकर कोई विस्तृत आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। जांच पूरी होने के बाद ही

कथित लेनदेन, ड्रग्स जब्ती मामले और इसमें शामिल लोगों की भूमिका को लेकर स्थिति स्पष्ट हो सकेगी। अधिकारियों के आवास से मिले दस्तावेजों और डिजिटल उपकरणों की जांच के आधार पर आने वाले दिनों में मामले में और खुलासे होने की संभावना है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संन्यास : स्वयं से समष्टि की ओर

(लेखक- कुमार कृष्णन)

- परमहंस स्वामी सत्यानंद सरस्वती के जीवन में साधना, सेवा और योग का अर्थ

(संन्यास दिवस 12 सितंबर पर विशेष)

12 सितंबर 1947। भारत आजादी की पहली सुबह के उल्लास और विभाजन की विभीषिका के बीच खड़ा था। इतिहास बाहर राजनीतिक स्वतंत्रता का नया अध्याय लिख रहा था और भीतर मनुष्य अपने अस्तित्व, भय और भविष्य के सवालों से जूझ रहा था। उसी समय ऋषिकेश में गंगा के तट पर एक युवा साधक अपने जीवन की ऐसी स्वतंत्रता की ओर बढ़ रहा था, जिसका अर्थ राजनीतिक मुक्ति से कहीं गहरा था।

उस दिन स्वामी शिवानंद सरस्वती ने उन्हें दशानामी संन्यास परंपरा में दीक्षित किया और नाम दिया—स्वामी सत्यानंद सरस्वती। गंगा की धारा के सामने लिया गया वह संकल्प आगे चलकर एक व्यक्ति की निजी आध्यात्मिक यात्रा भर नहीं रहा। उसने योग को आश्रमों और साधना-केंद्रों की सीमाओं से निकालकर सामान्य मनुष्य के जीवन तक पहुंचाने वाले एक व्यापक आंदोलन का रूप लिया।

इसलिए 12 सितंबर को केवल एक संन्यासी की दीक्षा की तारीख मानना उनके जीवन के अर्थ को छोटा कर देना होगा। यह वह दिन था, जब एक मनुष्य ने अपने जीवन को अपने लिए नहीं, एक बड़े उद्देश्य के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया।

संन्यास को हम अक्सर संसार से विरक्ति और पलायन के अर्थ में समझते हैं। लेकिन स्वामी सत्यानंद का जीवन इस सामान्य धारणा को उलट देता है। उनका संन्यास संसार छोड़ने का नहीं, अपने छोटे 'मैं' से निकलकर व्यापक 'हम' में प्रवेश करने का मार्ग बना। गुरु-सेवा से योग-प्रसार, योग-प्रसार से संस्थान-निर्माण, संस्थान-निर्माण के बाद स्वयं संस्थाओं से विरक्ति और अंततः गहन साधना से लोकसेवा तक उनकी यात्रा इसी अर्थ को विस्तार देती है।

1923 में अल्मोड़ा में जन्मे सत्यानंद के भीतर बचपन से ही आध्यात्मिक जिज्ञासा थी। जीवन के सामान्य अनुभव उनके भीतर ऐसे प्रश्न पैदा करते थे जिनका उत्तर केवल बाहरी दुनिया में नहीं था। संतों का सान्निध्य मिला और अंततः गुरु की खोज उन्हें ऋषिकेश तक ले गई। 1943 में उनकी भेंट स्वामी शिवानंद से हुई। यही भेंट उनके जीवन की दिशा बदलने वाली थी।

गुरु के आश्रम में उन्होंने जाना कि साधना केवल ध्यान में आंखें बंद कर लेने का नाम नहीं है। सेवा भी साधना है और श्रम भी। आश्रम के छोटे-बड़े कामों में स्वयं को लगाना, शारीरिक श्रम करना और गुरु की सेवा करना उनके व्यक्तित्व को भीतर से गढ़ने की प्रक्रिया थी।

संन्यास की दीक्षा के बाद भी उनके सामने कोई तैयार रास्ता नहीं था। गुरु ने उन्हें योग को जनसामान्य तक ले जाने की जिम्मेदारी दी। 1956 के बाद उन्होंने परिव्राजक जीवन अपनाया और भारत में घूमते हुए योग तथा आध्यात्मिक साधनाओं का अनुभव व्यापक बनाया। परमहंस स्वामी निरंजनानंद सरस्वती के मुताबिक इसी क्रम में 6 मई को मुंगेर आए।आगे चलकर मुंगेर उनकी कर्मभूमि बना। 1960 के दशक में इंटरनेशनल योग फेलोशिप मूवमेंट और फिर बिहार स्कूल ऑफ योग के माध्यम से योग को व्यवस्थित ढंग से सिखाने और प्रसारित करने का काम शुरू हुआ।

मुंगेर केवल एक आश्रम या योग-शिक्षण का केंद्र नहीं बना। वह उस प्रयोग की भूमि बना जिसमें प्राचीन योग को आधुनिक मनुष्य की आवश्यकताओं के साथ संवाद करने की कोशिश की गई।

स्वामी सत्यानंद ने योग को केवल आसन तक सीमित नहीं किया। शरीर, श्वास, मन, चेतना और जीवन-पद्धति—इन सबको उन्होंने योग की व्यापक परिधि में रखा। योगनिद्रा, प्राणायाम, ध्यान, मुद्रा, बंध, प्रत्याहार और अनेक साधनाओं को उन्होंने ऐसी व्यवस्थित शैली में प्रस्तुत किया जिसे आधुनिक मनुष्य अपने जीवन में अपना सके।

उनकी दृष्टि में योग शरीर को मोड़ने की कला नहीं था। वह मनुष्य को स्वयं को देखने और बदलने की प्रक्रिया था। यही कारण है कि उनके यहां हठयोग के साथ राजयोग, कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग भी एक समग्र दृष्टि में दिखाई देते हैं। आज जब योग विश्वभर में जीवनशैली का हिस्सा बन चुका है, तब यह याद रखना जरूरी है कि कभी योग को रहस्य, तप और संन्यास की सीमित दुनिया से बाहर निकालना आसान नहीं था। सत्यानंद ने योग को सामान्य गृहस्थ, विद्यार्थी, कर्मचारी और आधुनिक मनुष्य के जीवन से जोड़ने का प्रयास किया। योग को जीवन से जोड़ना ही उनके कार्य की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक था।

उनके शिष्य और आध्यात्मिक उत्तराधिकारी परमहंस स्वामी निरंजनानंद सरस्वती ने उनके इस योगदान का मूल्यांकन करते हुए कहा है—

स्वामी सत्यानंद ने योग को नया जीवन, नया जन्म दिया। उन्होंने योग को पुनर्जीवित किया—अन्यथा वह खो जाता। इसलिए स्वामी सत्यानंद आज के पतंजलि हैं।

यह कथन किसी गुरु की प्रशंसा भर नहीं है। इसके भीतर आधुनिक योग के इतिहास की एक व्याख्या भी छिपी है। पतंजलि ने योग को सूत्रबद्ध किया था; सत्यानंद ने आधुनिक समय में योग की विविध परंपराओं को एक व्यावहारिक, शिक्षणीय और जीवनोपयोगी स्वरूप देने का प्रयास किया। उनकी कृति फोर चैप्टर्स ऑन फ्रीडम पतंजलि के योगसूत्र पर उनकी विस्तृत व्याख्या का उदाहरण है।

लेकिन सत्यानंद के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय शायद उनके द्वारा बनाई गई संस्थाओं से जुड़ा नहीं, बल्कि उन संस्थाओं से स्वयं को अलग कर लेने के निर्णय से जुड़ा है।

1988 में जब उनका योग-अभियान व्यापक पहचान प्राप्त कर चुका था, उन्होंने संगठनात्मक जिम्मेदारियों से स्वयं को अलग किया और स्वामी निरंजनानंद सरस्वती को आगे की जिम्मेदारी सौंपी। यह निर्णय उनके संन्यास को एक नया अर्थ देता है।

संस्था बनाना एक उपलब्धि हो सकती है, लेकिन अपनी बनाई संस्था से मोह छोड़ देना एक दूसरी तरह की साधना है। मनुष्य अक्सर त्याग की बात करता है, लेकिन अपनी उपलब्धियों पर अधिकार छोड़ना कठिन होता है। सत्यानंद ने यहां भी अपने जीवन को परीक्षा में रखा।

संन्यास का अर्थ केवल वस्तुओं का त्याग नहीं, उपलब्धियों पर अपने अधिकार-बोध का त्याग भी है।

मुंगेर से निकलने के बाद उनकी यात्रा रिखिया की ओर हुई। यहां उनका जीवन गहन साधना और तपस्या की ओर मुड़ा। लेकिन उनकी साधना फिर भी मनुष्य से अलग नहीं हुई। आसपास के ग्रामीण और आदिवासी समाज की जीवन-स्थितियां उनकी चिंता का हिस्सा बनीं। आवास, पेयजल, चिकित्सा, शिक्षा और आजीविका जैसे क्षेत्रों में सेवा-कार्य आगे बढ़े। यहां उनके जीवन की यात्रा एक पूरा वृत्त बनाती है। शुरुआत गुरु-सेवा से हुई थी। फिर योग के माध्यम से मनुष्य तक पहुंचने का प्रयास हुआ। और अंततः साधना फिर मनुष्य के पास लौट आई।

आत्मबोध और लोकमंगल के बीच कोई दीवार नहीं रही।

यही वह बिंदु है जहां सत्यानंद की आध्यात्मिकता आज के समय के लिए महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि आध्यात्मिकता मनुष्य के दुख से मुंह मोड़ ले तो वह केवल निजी अनुभव रह जाती है। लेकिन यदि साधना हमें दूसरे के दुख को समझने, उसके जीवन को बेहतर बनाने और उसके सम्मान की रक्षा करने की प्रेरणा दे, तब वह सामाजिक अर्थ ग्रहण करती है।

आज योग के सामने सबसे बड़ा प्रश्न शायद यही है कि वह बाजार में बिकने वाली जीवनशैली बनकर रह जाएगा या मनुष्य के भीतर और समाज के बीच कोई गहरा परिवर्तन पैदा करेगा।

योग यदि केवल शरीर को स्वस्थ रखने तक सीमित है तो वह व्यायाम बन सकता है। यदि वह मन को शांत करता है तो ध्यान बन सकता है। लेकिन जब वह मनुष्य को अपने भीतर झांकने के साथ-साथ दूसरे मनुष्य के दुःख को देखने की दृष्टि देता है, तब वह करुणा और सेवा बन जाता है।

परमहंस स्वामी निरंजनानंद का एक अन्य संदेश इस संदर्भ में आज विशेष अर्थ रखता है। आधुनिक जीवन में योग को बहुत जटिल बनाने के बजाय उसे रोजमर्रा के जीवन में उतारने की बात करते हुए उन्होंने सजग भोजन, मधुर वाणी, एकाग्र कर्म, विश्राम, करुणापूर्ण संबंध, साहस और जिम्मेदारी को व्यावहारिक योग से जोड़ा है। उनके अनुसार योग का लक्ष्य जीवन से भागना नहीं, जीवन को बेहतर बनाना है।

यह बात सत्यानंद की संपूर्ण जीवन-यात्रा को समझने की कुंजी भी है।

उनका संन्यास जीवन से भागने का रास्ता नहीं था। वह जीवन को अधिक गहराई से समझने का रास्ता था। उनका योग शरीर से शुरू होकर मन तक गया, मन से चेतना तक पहुंचा और चेतना से समाज तक लौटा।1947 में गंगा के तट पर लिया गया संन्यास अंततः किसी एक व्यक्ति की मुक्ति की कथा नहीं बना। वह 'मैं' से 'हम' और साधना से सेवा तक की यात्रा बन गया।

आज जब हम उनके संन्यास दिवस पर उन्हें स्मरण करते हैं, तब प्रश्न केवल यह नहीं होना चाहिए कि उन्होंने योग के लिए क्या किया। प्रश्न यह भी होना चाहिए कि उनके जीवन ने हमें संन्यास का कौन-सा अर्थ दिया।

क्या संन्यास वस्त्र बदल लेना है?

क्या संन्यास संसार से दूर हो जाना है?

या फिर अपने भीतर के लोभ, अहंकार और अधिकार-बोध को छोड़कर अपने जीवन को व्यापक हित के लिए समर्पित करना है?

स्वामी सत्यानंद का जीवन तीसरे उत्तर की ओर संकेत करता है।

12 सितंबर 1947 को गंगा के किनारे आरंभ हुई वह यात्रा अंततः गंगा की तरह ही फैलती चली गई—पहले गुरु की ओर, फिर योग की ओर, फिर संसार की ओर और अंततः उस मनुष्य की ओर, जिसके जीवन में साधना का अर्थ सेवा बन सकता है।

यही उनके संन्यास की सबसे बड़ी सार्थकता है।

और शायद आज के समय में उनके जीवन को याद करने का सबसे जरूरी कारण भी यही है—सच्चा संन्यास संसार से दूरी नहीं बनाता; वह मनुष्य के दुःख के और करीब ले जाता है।

अपने लिए कम होते जाना और समष्टि के लिए अधिक होते जान
शायद संन्यास का यही सबसे कठिन और सबसे सुंदर अर्थ है।

संपादकीय

पनीर का अर्थशास्त्र

एक समय देश में विशिष्ट खाद्य पदार्थ माने जाने वाले पनीर को लेकर आज गहराता अविश्वास चिंता की बात है। मुनाफे के लिये उपभोक्ता के विश्वास से खिलवाड़ का यह धंधा पूरे देश में खूब चल रहा है। दिल्ली में सामने आया नकली पनीर का मामला इसी कड़ी का एक हिस्सा है। निस्संदेह, ये मामले हमारी खाद्य सुरक्षा व्यवस्था की एक बड़ी कमजोरी को ही उजागर करते हैं। ये विडंबना ही है कि किसी उत्पाद की लागत, उसमें प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं और ग्राहक को इस बाबत दी जाने वाली जानकारी में अकसर विरोधाभास पाया जाता है। देश में एनालॉग पनीर की धड़ल्ले से बिक्री के पीछे भी मुनाफे का प्रलोभन ही है। जिसमें वेजिटेबल फैट,स्टार्च, प्लांट प्रोटीन और गैर डेयरी उत्पादों को मिलाया जाता है। दरअसल, यह पनीर, असली दूध वाले पनीर की तुलना में काफी सस्ता होता है और उत्पादकों के मुनाफे को बढ़ाता है। जानकारों का अनुमान है कि कीमतों का यह अंतर चालीस से पचास फीसदी तक हो सकता है। ऐसे में जब रेस्टोरेंट,कैटरर और खाने-पीने के दूसरे कारोबार कम मुनाफे पर करते हैं तो महंगे पनीर के जगह सस्ता पनीर इस्तेमाल करने का लालच होना एक स्वाभाविक बात है। दरअसल, इसका मतलब यह कतई नहीं है कि हर एनालॉग प्रोडक्ट वास्तव में खाने की दृष्टि से असुरक्षित ही होता है। वास्तव में मुख्य समस्या धोखा देने की है। यदि किसी डेयरी पदार्थों से मुक्त विकल्प की पहचान स्पष्ट तौर पर एनालॉग पनीर के तौर पर की जाती है, तो ग्राहक सोच-समझकर उसको खरीदने के बारे में फैसला स्वतंत्र रूप से ले सकते हैं। लेकिन सबसे बड़ी बात इसको लेकर ईमानदारी न होना है। जब विक्रेता इसे दूध का पनीर बताकर बेचने लगते हैं तो उपभोक्ता निर्णय नहीं ले पाते। ऐसे में असली पनीर वाली पौष्टिकता उन्हें नहीं मिल पाती। निर्विवाद रूप से इस मामले में रेस्टोरेंट सबसे कमजोर कड़ी के रूप में सामने आते हैं। जिनका मुख्य मकसद अपने मुनाफे को प्राथमिकता देना ही होता है। वास्तव में जब भी कोई रेस्टोरेंट अपने किचन में एनालॉग पनीर आदि का इस्तेमाल करना शुरू करता है और उससे कोई व्यंजन बना लेता है तो ग्राहक नहीं समझ पाता है कि असली पनीर है या नकली पनीर है। देश के खाद्य पदार्थों का नियमन करने वाली संस्था एफएसएसएआई ने फूड-सर्विस देने वाले संस्थानों को स्पष्ट निर्देश दे रखे हैं कि वे यह सुनिश्चित करें कि पनीर वाली डिश में एनालॉग पनीर का इस्तेमाल ग्राहकों को सही जानकारी दिए बिना न किया जाए। इस विवाद के चलते देश के कई राज्यों ने कृत्रिम पनीर के खिलाफ सख्त कदम उठाए हैं। पंजाब सरकार ने इसके बनाने, संग्रहण करने, ट्रांसपोर्ट करने, बांटने और पनीर के नाम पर बेचने पर एक साल के लिये रोक लगा दी है। लेकिन यह भी एक हकीकत है कि एनालॉग पनीर के खिलाफ छापेमारी और उस पर प्रतिबंध लगाने मात्र से यह समस्या हल नहीं होने वाली है। दरअसल, नियामकों को उन आर्थिक कारणों पर भी गंभीरता से ध्यान देना होगा, जिसकी वजह से असली पनीर की जगह नकली पनीर का इस्तेमाल धड़ल्ले से किया जा रहा है। वास्तव में पनीर की जांच और गुणवत्ता के असली पनीर की उपलब्धता को सुनिश्चित करना जरूरी है। साथ ही तमाम रेस्टोरेंट व होटलों को उन खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता के लिये जवाबदेह बनाना होगा, जिन्हें वे खरीदते हैं और ग्राहकों को परोसते हैं। निस्संदेह, हर ग्राहक को इस बात का हक है कि वह जान सके कि वह किस तरह का पनीर खा रहा है। एनालॉग पनीर उत्पादकों को उत्पाद के पैकेट पर स्पष्ट रूप से लिखना अनिवार्य होना चाहिए कि यह एनालॉग पनीर है।

पर्युषण आत्मशुद्धि और अनासक्ति की साधना का पर्व

(लेखक- कांतिलाल मांडोत)

(पर्युषण महापर्व चौथा दिन)

पर्युषण जैन धर्म का ऐसा आध्यात्मिक पर्व है, जो मनुष्य को बाहरी आडम्बर से हटाकर अपने भीतर झांकने की प्रेरणा देता है। यह पर्व केवल पूजा, व्रत और धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मनिरीक्षण, संयम, त्याग, तप, क्षमा और मन की शुद्धि का अवसर है। पर्युषण के दिनों में व्यक्ति अपने जीवन को निकट से देखता है और यह समझने का प्रयास करता है कि उसके भीतर क्रोध, मान, माया, लोभ, आसक्ति और अहंकार जैसी कौन-कौन सी विकृतियां जड़ जमा चुकी हैं। आत्मा की ओर लौटने की यही प्रक्रिया पर्युषण की वास्तविक साधना है। पर्युषण की आराधना में जीवन को हल्का, सरल, शांत और पवित्र बनाने का संदेश मिलता है। संसार में रहते हुए संसार के प्रति आसक्ति कम करना इसका मूल भाव है। मनुष्य परिवार, धन, पद और सुविधाओं के बीच रहते हुए भी यदि इनके प्रति ममता और मेरा-पन को सीमित कर सके तो जीवन का भार कम हो सकता है। संसार छोड़ना ही त्याग नहीं है, बल्कि संसार की वस्तुओं के बीच रहते हुए उनके प्रति अनावश्यक आसक्ति छोड़ देना भी त्याग की महत्वपूर्ण साधना है। जिस वस्तु के साथ हमारा ममत्व नहीं जुड़ा, वह वस्तु हमारे मन पर भार नहीं बन सकती। इसी भाव को लघुता कहा गया है।

जीवन की यात्रा में सामान जितना कम होगा, यात्रा उतनी ही सहज होगी। यही बात मन पर भी लागू होती है। ममता, चिंता, इच्छाओं और अनावश्यक अपेक्षाओं का बोझ मनुष्य को भीतर से भारी बना देता है। मन जितना भारमुक्त होगा, आत्मिक यात्रा उतनी ही सरल होगी। संसार में रहकर भी अनासक्त रहने का भाव हमें यह सिखाता है कि वस्तुओं का उपयोग करें, लेकिन वस्तुओं को अपने मन का स्वामी न बनने दें। भरत चक्रवर्ती का उदाहरण इसी अनासक्ति की प्रेरणा देता है कि अपार वैभव के बीच रहते हुए भी मन योगी की तरह निर्लिप्त रह सकता है।

पर्युषण का एक महत्वपूर्ण संदेश विरति अर्थात् त्याग है। व्रत और प्रत्याख्यान इसी त्याग भावना को मजबूत करते हैं। त्याग केवल किसी वस्तु का बाहरी रूप से परित्याग कर देना नहीं है। वास्तविक त्याग तब है, जब उस वस्तु के प्रति मन की लालसा और आसक्ति भी कम हो जाए। यदि वस्तु सामने न होने पर भी मन उसी के लिए बेचैन रहे तो बाहरी त्याग अधूरा है। इसलिए पर्युषण हमें अपने भीतर की इच्छाओं को पहचानने और उन पर संयम स्थापित करने की प्रेरणा देता है।

इसके साथ उपशम की साधना भी आवश्यक है। क्रोध, द्वेष और कषायों से संतप्त मन में धर्म का बीज आसानी से अंकुरित नहीं होता। जैसे गर्म भूमि में बोया गया बीज पनप नहीं पाता, वैसे ही अशांत और क्रोध से भरे हृदय में उपदेश का प्रभाव स्थायी नहीं होता। पर्युषण के दिनों में शास्त्रों का वाचन, प्रवचन और धार्मिक आयोजन तभी सार्थक होंगे, जब उनका प्रभाव मन की शांति और व्यवहार की मधुरता में दिखाई दे। उपशम का अर्थ है भीतर की उथल-पुथल को शांत करना और क्षमा की भावना को विकसित करना।

निर्वाण का भाव भी इसी आंतरिक शांति से जुड़ा है। जिस प्रकार हवा के तेज झोंकों में दीपक की लौ स्थिर नहीं रह सकती, उसी प्रकार मन में आसक्ति, लालसा और कामनाओं का तूफान हो तो ज्ञान की ज्योति स्थिर नहीं रह सकती। मन को चंचलता से मुक्त करना और उसे वैराग्य की दिशा में ले जाना आवश्यक है। भोगों के बीच रहते हुए भी उनके प्रति अनासक्त रहने की साधना मनुष्य को भीतर से स्वतंत्र बनाती है। पक्षी और बंदर का उदाहरण इस भाव को सरलता से समझाता है। डाल टूटने पर पक्षी उड़ जाता है, क्योंकि वह डाल से बंधा नहीं था, जबकि आसक्ति में बंधा प्राणी उसी टूटती डाल के साथ गिरता है। पर्युषण हमें जीवन में ऐसी ही अनासक्ति का अभ्यास कराता है। मन की पवित्रता भी पर्युषण की प्रमुख साधना है। शरीर पर बाहरी मैल लगने से शरीर अशुद्ध होता है, उसी प्रकार लोभ, छल, कपट, द्वेष और स्वार्थ जैसे विकार मन को मलिन करते हैं। लोभ को अनेक पापों की जड़ माना गया है, क्योंकि लोभ बढ़ने पर विवेक कमजोर पड़ने लगता है। मनुष्य अपने हित के लिए अनुचित मार्ग अपनाने तक को तैयार हो जाता है। इसलिए पर्युषण केवल बाहरी शुद्धि का नहीं, बल्कि विचारों की सफाई का पर्व है। मन को निर्मल बनाने का प्रयास ही सच्ची धार्मिक आराधना है। आर्जव अर्थात् सरलता और ऋजुता भी धर्म के लिए आवश्यक है। धर्म उसी हृदय में टिक सकता है जो कपट और छल से मुक्त हो। सीधा स्तंभ बड़े भवन का भार संभाल सकता है, लेकिन उसमें टेढ़ापन आ जाए तो उसकी मजबूती समाप्त हो जाती है। उसी प्रकार जीवन में कपट का प्रवेश हो जाए तो धर्म की नींव कमजोर पड़ने लगती है। पर्युषण मनुष्य को निष्कपटता, सरलता और सहजता अपनाने का अवसर देता है। बालक की तरह निर्मल और सहज मन में धर्म का संस्कार शीघ्र अंकुरित होता है।

मृदुता भी पर्युषण का महत्वपूर्ण संदेश है। कठोर भूमि में बीज अंकुरित नहीं होता, जबकि कोमल और उपजाऊ मिट्टी जीवन को जन्म देती है। इसी प्रकार अहंकार, द्वेष और स्वार्थ से कठोर हुआ हृदय धर्मोपदेश को ग्रहण नहीं कर पाता। इसलिए मन की भूमि को मृदु बनाना आवश्यक है। विनम्रता, करुणा और सहानुभूति से मन को कोमल बनाया जा सकता है। पर्युषण आत्मनिरीक्षण के साथ यह देखने का अवसर देता है कि हमारा हृदय पत्थर जैसा कठोर हो रहा है या मिट्टी जैसा कोमल।

पर्युषण में आगम वाचन की परम्परा भी इसी उद्देश्य से जुड़ी दिखाई देती है। कल्पसूत्र और अन्तगड़सूत्र के वाचन से जैन समाज अपने तीर्थंकरों, साधु-साध्वियों और आत्मसाधकों के त्याग, तप और संयममय जीवन से प्रेरणा लेता आया है। अन्तगड़सूत्र में भगवान नेमिनाथ और भगवान महावीर के युग के आत्मसाधकों के जीवन का वर्णन मिलता है। गजसुकुमार जैसे बाल मुनि की कठोर तितिक्षा और अनेक साधकों की तपश्चर्या का प्रसंग सुनकर मन में त्याग और तप की भावना जागती है। आगम वाचन का उद्देश्य केवल प्राचीन कथाओं को सुनना नहीं, बल्कि उन आदर्शों को वर्तमान जीवन में उतारना है। कल्पसूत्र की परम्परा के पीछे भी यही भाव दिखाई देता है। अपने आराध्य पूर्वजों और तीर्थंकरों के जीवन का स्मरण समाज में आत्मगौरव और धर्मोत्साह जगाता है। जब मनुष्य अपने आदर्शों के त्याग और तप को सुनता है तो उसके भीतर भी कुछ अच्छा करने की प्रेरणा पैदा होती है। इसलिए पर्युषण का आगम वाचन ज्ञान, श्रद्धा और आत्मचिंतन का माध्यम बनता है।

वास्तव में पर्युषण आठ दिनों की धार्मिक दिनचर्या भर नहीं, बल्कि जीवन को भीतर से बदलने का अवसर है। यदि इन दिनों में हम शांति, विरति, उपशम, निवृत्ति, शौच, आर्जव, मृदुता और लघुता जैसे जीवन मूल्यों पर गंभीरता से चिंतन करें और उनमें से कुछ को अपने व्यवहार का हिस्सा बना लें तो पर्युषण की साधना सार्थक हो सकती है।

ज्ञेय और ज्ञान का संबंध

दर्शन के क्षेत्र में ज्ञान और ज्ञेय की मीमांसा चिरकाल से होती रही है। आदर्शवादी और विज्ञानवादी दर्शन ज्ञेय की स्वतंत्र सत्ता स्वीकार नहीं करते। वे केवल ज्ञान की ही सत्ता को मान्य करते हैं। अनेकांत का मूल आधार यह है कि ज्ञान की भांति ज्ञेय की भी स्वतंत्र सत्ता है। द्रव्य ज्ञान के द्वारा जाना जाता है, इसलिए वह ज्ञेय है। ज्ञेय चैतन्य के द्वारा जाना जाता है, इसलिए वह ज्ञान है। ज्ञेय और ज्ञान अन्योन्याश्रित नहीं हैं। ज्ञेय है, इसलिए ज्ञान है और ज्ञान है इसलिए ज्ञेय है, इस प्रकार यदि एक के होने पर दूसरे का होना सिद्ध हो तो ज्ञेय और ज्ञान दोनों की स्वतंत्र सत्ता सिद्ध नहीं हो सकती। द्रव्य का होना ज्ञान पर निर्भर नहीं है और ज्ञान का होना द्रव्य पर निर्भर नहीं है। इसलिए द्रव्य और ज्ञान दोनों स्वतंत्र हैं। ज्ञान के द्वारा द्रव्य जाना जाता है, इसलिए उनमें ज्ञेय और ज्ञान का संबंध है। ज्ञेय अनंत है और ज्ञान भी अनंत है। अनंत को अनंत के द्वारा जाना जा सकता है। जानने का अगला पर्याय है कहना। अनंत को जाना जा सकता है, कहा नहीं जा सकता। कहने की शक्ति बहुत सीमित है। जिसका ज्ञान अनावृत्त होता है, वह भी उतना ही कह सकता है जितना कोई दूसरा कह सकता है। भाषा की क्षमता ही ऐसी है कि उसके द्वारा एक बार में एक साथ एक ही शब्द कहा जा सकता है।

हमारे ज्ञान की क्षमता भी ऐसी है कि हम अनंतधर्मा द्रव्य को नहीं जान सकते। हम अनंत-धर्मात्मक द्रव्य के एक धर्म को जानते हैं और एक ही धर्म का प्रतिपादन करते हैं। एक धर्म को जानना और एक धर्म को कहना नय है। यह अनेकांत और स्याद्वाद का मौलिक स्वरूप है। उनका दूसरा स्वरूप है प्रमाण। अनंत-धर्मात्मक द्रव्य को जानना और उसका प्रतिपादन करना प्रमाण है। हम अनंतधर्मा द्रव्य को किसी एक धर्म के माध्यम से जानते हैं। इसमें मुख्य और गौण दो दृष्टिकोण होते हैं। द्रव्य के अनंत धर्मो में से कोई एक धर्म मुख्य हो जाता है और शेष धर्म गौण। नय हमारी वह ज्ञान-पद्धति है, जिसमें हम केवल धर्म को जानते हैं, धर्मो को नहीं जानते। प्रमाण हमारी वह ज्ञान-पद्धति है, जिससे हम एक धर्म के माध्यम से समग्र धर्मो को जानते हैं।

विचार मंथन

डोनाल्ड ट्रंप के गुरु हैं मोदी?

(लेखक -सनत जैन)

-अमेरिका सहित दुनिया के देशों में मोदी मॉडल की गूंज

क्या दुनिया की सबसे पुरानी लोकतांत्रिक व्यवस्था अब दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र से चुनाव जीतने के नए-नए तरीके सीख रही है? यह सवाल इसलिए महत्वपूर्ण हो गया है, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में भारत की चुनाव व्यवस्था का सार्वजनिक रूप से उल्लेख करते हुए, उसे अमेरिका के लिए उदाहरण के तौर पर पेश किया है। अगस्त में ट्रंप ने भारत के मतदाता पहचान पत्र और नागरिकता सत्यापन व्यवस्था का हवाला देते हुए अमेरिकी चुनावों में कड़े पहचान नियम लागू करने की वकालत की। सीधे यह कहना कि ट्रंप, नरेंद्र मोदी के शिष्य बन गए हैं, ठीक नहीं है, लेकिन जिस तरह से नरेंद्र मोदी को ट्रम्प फॉलो कर रहे हैं, दोनों नेताओं की राजनीति में कुछ दिलचस्प और विचित्र समानताएं जरूर दिखने को मिलती हैं। यही तुलना इस तरह के विचार को बल देती हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले वर्षों में एक मजबूत राजनीतिक ब्रांड विश्व गुरु के रूप में भारत सहित सारी दुनिया में अपने आपको पेश किया है। समर्थक उन्हें विश्व मंच पर भारत की प्रभावी आवाज और विश्व गुरु के रूप में पिछले कई वर्षों से प्रस्तुत करते हैं। मोदी को विभिन्न देशों से अनेक सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिले हैं। दुनिया के किसी भी राष्ट्रॉध्यक्ष को इतने कम समय में इतने सम्मान नहीं मिले हैं। किसी नेता की अंतर्राष्ट्रीय लोकप्रियता और उसकी चुनावी रणनीति तथा लंबे समय तक सत्ता में बने रहने को उसकी सफलता से जोड़कर देखा जाता है। ट्रंप की राजनीति का सबसे बड़ा हथियार उनकी सीधी, आक्रामक और जोखिम लेने वाली शैली है। दूसरे कार्यकाल में उन्होंने टैरिफ को आर्थिक और राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। इसके परिणामस्वरूप अमेरिका में महंगाई और आर्थिक दबाव बना। आईएमएफ के अनुसार 2025 में अमेरिकी महंगाई पर टैरिफ का बड़ा असर दिखाई दिया। अमेरिका का सरकारी कर्ज 123.9 प्रतिशत जीडीपी की तुलना पर पहुंच गया। कुछ ऐसी ही स्थिति भारत की है। पिछले 12 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल में भारत के ऊपर कर्ज बढ़ता ही जा रहा है। अब असली समानता अर्थव्यवस्था से ज्यादा चुनावी राजनीति में दिखाई देने लगी है। भारत की चुनावी राजनीति में मतदाता पहचान, नागरिकता, मतदाता सूची और सत्यापन जैसे मुद्दे महत्वपूर्ण हैं। भारत में चुनाव आयोग की कार्य प्रणाली को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं। पिछले वर्षों में चुनाव आयोग को लेकर बहुत सारे मामले हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट भी गए हैं। इसके बाद भी डोनाल्ड ट्रंप इन्हीं मुद्दों को अमेरिकी में लाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने भारत की चुनाव व्यवस्था का उदाहरण देते हुए सेव एक्ट के समर्थन में नागरिकता प्रमाण और फोटो आईडी जैसी शर्तों की वकालत अमेरिका में शुरू कर दी है। भारत की एसआईआर और अमेरिका में प्रस्तावित चुनावी नियमों को समान बताना सही नहीं होगा। दोनों देशों की चुनाव व्यवस्था, संघीय ढांचा और मतदाता पंजीकरण प्रणाली अलग है। इसके बाद भी ट्रंप भारत की व्यवस्था को अमेरिका में लागू करने की कोशिश कर रहे हैं। अब आते हैं, सबसे दिलचस्प मुद्दे रेवड़ी या चुनाव के पहले मतदाताओं को आर्थिक सहायता देकर अपने पक्ष में करना। 9 सितंबर 2026 को ट्रंप ने घोषणा की है, यदि रिपब्लिकन पार्टी प्रतिनिधि सभा और सीनेट दोनों में बहुमत बनाए रखती है। तो अमेरिकी वयस्क नागरिकों को 5,000 डॉलर का डिविडेंड दिया जाएगा। इसका संभावित खर्च एक ट्रिलियन डॉलर से अधिक होगा। भारत में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा कथित तौर पर 15 लाख रुपये चुनाव जीतने पर देने का वादा किया गया था, जिसे बाद में चुनावी जुमला करार दिया गया। चुनाव के पहले भारत में इस तरह की घोषणा पिछले कई चुनाव में देखने को मिल रही हैं। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी चुनावी सभाओं में इसे फ्री की रेवड़ी कहते थे। चुनाव के ठीक पहले अब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी यही रास्ता अख़्तियार किया है।

यहीं से वर्तमान राजनीति के नए समीकरण शुरू होते हैं। बड़ी संख्या में मतदाताओं को नगद राशि देकर अपने पक्ष में मतदान कराकर चुनाव जीतना। पहले नेता की छवि, राजनीतिक दल की विचारधारा, राष्ट्रवाद, आम जनता के लिए घोषणा पत्र, जिसमें सरकार किस तरह से काम करेगी इसका उल्लेख होता था। विपक्षी पार्टी के खिलाफ प्रचार कर उनकी स्थिति को कमजोर करना चुनाव लड़ने का माध्यम होता था। पिछले एक दशक में सारी दुनिया के देशों में राजनीति की दिशा और दशा बदली है। जो सत्ता में काबिज है वह सत्ता छोड़ना नहीं चाहता है। चीन, अमेरिका, इजराइल एवं अन्य लोकतांत्रिक देशों के शासक अपना पद छोड़ना नहीं चाहते हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी कहा था वह तीसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति बनना चाहते हैं। क्या यह मोदी मॉडल है? कहना जल्दबाजी होगी। इतना जरूर कहा जा सकता है, जिस तरह भारतीय राजनीति में नेतृत्व की व्यक्तिगत छवि, अधिकारों का केंद्रीकरण, जनसंपर्क, राष्ट्रहित, धार्मिक ध्रुवीकरण, फ्री की रेवड़ी जैसी योजनाएं चुनावी रणनीति का हिस्सा हैं, वैसी ही प्रवृत्तियां अमेरिकी राजनीति में भी दिखाई दे रही हैं। असली सवाल यह नहीं है, मोदी ट्रंप के गुरु हैं या नहीं। असली सवाल यह है, क्या दुनिया की लोकतांत्रिक राजनीति अब एक-दूसरे देश से चुनाव जीतने की तकनीक सीख रही है? ट्रंप भारत से सबक ले रहे हैं, तो यह भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकतांत्रिक शक्ति की उपलब्धि मानना होगा। लोकतंत्र की सफलता केवल चुनाव जीतने में नहीं, बल्कि निष्पक्ष मतदाता सूची, स्वतंत्र संस्थाओं, पारदर्शी चुनाव, मजबूत अर्थव्यवस्था और नागरिक अधिकारों की रक्षा से होती है। इस दृष्टि से भविष्य में सवाल पूछेगा, पहले भारत व्यवस्था में अमेरिका से प्रेरणा लेता था, अब समय बदला है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

ब्रेंट क्रूड 1.05 डॉलर करीब 1 फीसदी चढ़कर 108.68 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंचा

साप्ताहिक आधार पर ब्रेंट और डब्ल्यूटीआई दोनों करीब 13 फीसदी ऊपर चढ़े भाव

नई दिल्ली, ।

कच्चे तेल की कीमतों में तेज उछाल जारी है। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और तेल की सप्लाई बाधित होने की आशंका के बीच शुक्रवार को ब्रेंट और अमेरिकी डब्ल्यूटीआई क्रूड दोनों में करीब एक फीसदी की तेजी दर्ज की गई। खास बात यह है कि दोनों प्रमुख कच्चे तेल के भाव मई के मध्य के बाद पहली बार किसी हफ्ते का अंत 100 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर करने की ओर बढ़ रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक ब्रेंट क्रूड 1.05 डॉलर यानी करीब 1 फीसदी चढ़कर 108.68 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। वहीं अमेरिकी डब्ल्यूटीआई क्रूड 95 सेंट यानी करीब 1 फीसदी की तेजी के साथ 103.45 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा था। इससे पहले गुरुवार को दोनों में 6 फीसदी से ज्यादा की जोरदार तेजी आई थी।

रिपोर्ट के मुताबिक कच्चे तेल में तेजी सिर्फ एक-दो कारोबारी सत्र तक सीमित नहीं है। साप्ताहिक आधार पर ब्रेंट और डब्ल्यूटीआई दोनों करीब 13 फीसदी ऊपर चल रहे हैं। यह 17 जुलाई को खत्म हुए हफ्ते के बाद कच्चे तेल की कीमतों में सबसे बड़ी साप्ताहिक तेजी है। तेल में इस उछाल की सबसे बड़ी वजह पश्चिम एशिया में बढ़ता संघर्ष और अहम समुद्री रास्तों पर जहाजों की आवाजाही को लेकर पैदा हुआ खतरा है। हूती लड़ाकों ने गुरुवार को यमन के मोखा बंदरगाह पर कब्जा कर लिया। इससे लाल सागर से गुजरने वाले जहाजों की सुरक्षा को लेकर चिंता और बढ़ गई है। दूसरी तरफ फारस की खाड़ी में होर्मुज से आवाजाही पहले ही सीमित बनी हुई है और हाल के दिनों में तेल टैंकरों पर हमले बढ़े हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक यमन की तरफ से सऊदी अरब की ऊर्जा सुविधाओं पर हुए हमलों ने संघर्ष का दायरा ईरान और होर्मुज से आगे बढ़ा दिया है। विश्लेषकों को डर है कि अगर तनाव लंबे समय तक चला तो पूरे इलाके से तेल की सप्लाई प्रभावित हो सकती है। ईरान ने कहा है कि उसने बुधवार को होर्मुज के पास 10 जहाजों पर हमला किया, जबकि अमेरिका ने पांच ईरानी तेल टैंकरों को निशाना बनाया। इसके बाद ईरान के इस्लामिक रिवॉल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स ने कहा कि आगे हमला होने पर उसकी जवाबी कार्रवाई और तेज होगी।अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने भी ईरान के पिकऐक्स माउंटेन को निशाना बनाए जाने की संभावना की चेतावनी दी है। यह जगह ईरान की बुरी तरह क्षतिग्रस्त नतांज यूरेनियम संवर्धन सुविधा के पास स्थित है। इन बयानों से बाजार में यह चिंता बढ़ रही है कि संघर्ष जल्दी खत्म होने के बजाय लंबा खिंच सकता है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना 4,400 डॉलर प्रति औंस के नीचे फिसला

अब बाजार की नजर अमेरिका में आने वाले महंगाई के दो आंकड़ों पर

नई दिल्ली, ।

सोने और चांदी की कीमतों पर फिर दबाव नजर आ रहा है। गुरुवार को अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना 4,400 डॉलर प्रति औंस के नीचे फिसल गया, जबकि चांदी 66.5 डॉलर के नीचे आ गई। अब बाजार की नजर अमेरिका में आने वाले महंगाई के दो अहम आंकड़ों पर है। इनमें उत्पादक कीमतों से जुड़ा पीपीआई और खुदरा महंगाई से जुड़ा सीपीआई डेटा शामिल है। इन आंकड़ों से संकेत मिल सकता है कि अमेरिकी फेडरल रिजर्व 15-16 सितंबर की बैठक में ब्याज दर बढ़ाएगा या मौजूदा स्तर पर बनाए रखेगा। एक रिसर्च के मुताबिक फिलहाल बाजार में फेड की तरफ से ब्याज दर बढ़ाए जाने की करीब 60 फीसदी संभावना मानी जा रही है। ऐसे में अमेरिका के महंगाई आंकड़े सोने-चांदी की अगली चाल के लिए काफी अहम हो गए हैं। सबसे पहले अमेरिका का उत्पादक मूल्य सूचकांक यानी पीपीआई डेटा आएगा। इसके बाद शुक्रवार को उपभोक्ता मूल्य सूचकांक यानी सीपीआई के आंकड़े जारी होंगे। बाजार के लिए सीपीआई ज्यादा अहम रहने वाला है और इससे फेड के फैसले को लेकर तस्वीर ज्यादा साफ हो सकती है। अगर महंगाई के आंकड़े अनुमान से मजबूत रहते हैं तो ब्याज दर बढ़ने की उम्मीद और मजबूत हो सकती है। इससे सोने और चांदी पर दबाव बढ़ सकता है। इसके उलट महंगाई में नरमी दिखाई देती है तो फेड के ब्याज दर नहीं बढ़ाने की उम्मीद बढ़ सकती है, जिससे सोने को सहारा मिल सकता है।

गुरुवार की गिरावट से पहले बुधवार को सोने में करीब एक फीसदी और चांदी में 2 फीसदी से ज्यादा की तेजी आई थी। इसकी एक बड़ी वजह डॉलर में कमजोरी थी। आम तौर पर डॉलर कमजोर होने से सोने को फायदा मिलता है।हालांकि इस दौरान अमेरिकी बॉन्ड की यील्ड बढ़ने से सोने की तेजी पर दबाव भी बना रहा। अमेरिकी सरकार ने 10 से 20 साल की अवधि वाले 6 अरब डॉलर के बॉन्ड वापस खरीदने की कार्रवाई की। इसका मकसद लंबी अवधि में सरकार के लिए कर्ज जुटाने की लागत पर दबाव कम करना था। इसके बावजूद अमेरिका के 10 साल के बॉन्ड की यील्ड बढ़कर 4.85 फीसदी पहुंच गई।

शेयर बाजार गिरावट पर बंद

सेंसेक्स 120, निफ्टी 79 अंक गिरा

मुंबई ।

भारतीय शेयर बाजार शुक्रवार को गिरावट पर बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही बिकवाली हावी रहने से आई है। अमेरिका और ईरान के बीच संघर्ष से पश्चिम एशिया में तनाव जारी रहने के साथ ही कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने से भी बाजार पर दबाव आया है। हालांकि, दिनभर के कारोबार में यह अपने निचले स्तर से अच्छी रिकवरी करने में सफल रहा। आईटी, एफएमसीजी और बैंक शेयरों से मिले समर्थन ने बाजार को बड़ी गिरावट से बचाया।

दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स करीब

120.83 अंक फिसलकर 74,781.76 पर बंद हुआ1 वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 79.70 अंक टूटकर र 23,398.10 पर आ गया। आज सुबह दिन के शुरुआत में, सेंसेक्स 593.42 अंकों की गिरावट के साथ 74,309.16 पर खुला। इसी तरह निफ्टी भी 207 अंक फिसलकर 23,270.30 पर खुला और इंट्रा-डे में 23,231.40 के निचले स्तर तक चला गया था।

वहीं व्यापक बाजारों में, निफ्टी मिडकैप और निफ्टी स्मॉलकैप में गिरावट दर्ज की गई। सेक्टरवार देखें तो निफ्टी रियल्टी और निफ्टी मेटल में सबसे ज्यादा गिरावट रही। निफ्टी ऑटो, निफ्टी ऑयल

एंड गैस, निफ्टी पीएसयू बैंक, निफ्टी कंज्यूमर ड्यूरेबल्स और निफ्टी एफएमसीजी में भी गिरावट दर्ज की गई। इसके विपरीत, निफ्टी प्राइवेट बैंक, निफ्टी मीडिया और निफ्टी आईटी जैसे सेक्टरों में बढ़ोतरी दर्ज की गई। निफ्टी50 इंडेक्स में एचडीएफसी बैंक, डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज, टेक महिंद्रा, एचडीएफसी लाइफ और विप्रो के शेयरों में बढ़त देखने को मिली, जबकि हिंडाल्को इंडस्ट्रीज, जेएसडब्ल्यू स्टील, आयशर मोटर्स, टाटा स्टील और ओएनजीसी के शेयरों में सबसे ज्यादा गिरावट दर्ज की गई।

अगस्त में गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड में करीब 18 अरब डॉलर का निवेश आया

-सोने की मांग अमेरिका-यूरोप तक सीमित नहीं, एशिया के निवेशकों की भी दिलचस्पी बढ़ी

नई दिल्ली, ।

सोने में निवेश को लेकर निवेशकों का रुझान फिर बढ़ा है। अगस्त 2026 में गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड में करीब 18 अरब डॉलर का निवेश किया गया। यह अब तक का दूसरा सबसे बड़ा मासिक इनफ्लो है। सोने की मांग सिर्फ अमेरिका और यूरोप तक सीमित नहीं रही, बल्कि एशिया में भी निवेशकों की दिलचस्पी बढ़ी है। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के मुताबिक अगस्त में एशियाई गोल्ड ईटीएफ में करीब 2.04 अरब डॉलर का निवेश आया। फरवरी के बाद यह एशिया में सबसे मजबूत मासिक इनफ्लो है। वैश्विक स्तर पर गोल्ड ईटीएफ में आए निवेश का बड़ा हिस्सा उत्तरी अमेरिका और यूरोप में लिस्टेड फंडों ने किया।रिपोर्ट के मुताबिक अगस्त में दुनियाभर के गोल्ड ईटीएफ की कुल होल्डिंग करीब 121 टन बढ़कर 4,189 टन के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई। वहीं इन फंडों की कुल एसेट अंडर मैनेजमेंट 16 फीसदी बढ़कर करीब 615 अरब डॉलर हो गई। क्षेत्रवार देखें तो अगस्त में उत्तरी अमेरिका के फंडों में 7.70 अरब डॉलर और यूरोप के फंडों में 7.88 अरब डॉलर का निवेश हुआ। एशियाई बाजारों में चीन गोल्ड ईटीएफ निवेश के मामले में सबसे आगे रहा। अगस्त में चीन के गोल्ड ईटीएफ में करीब 1.54 अरब डॉलर का निवेश हुआ। इससे वहां की कुल होल्डिंग 10.7 टन बढ़कर 292.7 टन हो गई। शेयर बाजार की धीमी चाल और सरकारी बॉन्ड पर कम ब्याज मिलने की वजह से चीन के लोग सोने में पैसे लगा रहे हैं। जापान में अगस्त में गोल्ड ईटीएफ में करीब 17.44 करोड़ डॉलर का निवेश आया।

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन- भारत का सहयोग मंत्र, टकराव नहीं!

नई दिल्ली में शुरू हो रहे सम्मेलन में भारत साझा मुद्रा विवाद से दूर रहेगा

नई दिल्ली

राष्ट्रीय राजधानी में शनिवार से शुरू हो रहे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भारत इस 11-सदस्यीय समूह को एक ऐसे मंच के तौर पर प्रस्तुत करेगा जो वैश्विक विकास और सहयोग पर केंद्रित है, न कि किसी अन्य अंतरराष्ट्रीय समूह का विरोधी। मेज़बान देश के रूप में भारत ब्रिक्स की साझा मुद्रा से जुड़े किसी भी विवादास्पद प्रस्ताव से दूरी बनाए रखेगा, जिसका समर्थन पूर्व में रूस और चीन कर चुके हैं। भारत ने इस समूह को बातचीत, समझ और रचनात्मक सहयोग के मंच के तौर पर पेश करने की कोशिश की है। भारत ने इस वर्ष ब्रिक्स से जुड़ी बैठकों में हासिल किए गए 50 से अधिक विकास-केंद्रित परिणामों के माध्यम से अपना जन-केंद्रित नज़रिया पेश किया है। साथ ही भारत वैश्विक संस्थानों में सुधार और वर्ष 2028-29 के कार्यकाल के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अपनी दावेदारी के लिए आम सहमति बनाने की भी कोशिश करेगा। शिखर सम्मेलन से पहले ब्रिक्स सदस्य देशों के नेताओं का शुक्रवार से राजधानी नई दिल्ली पहुंचना शुरू हो जाएगा। इसी दिन ब्रिक्स व्यापार मंच के नेताओं के सत्र का भी आयोजन होगा, जिसमें रूस के राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित कई नेता शामिल होंगे। व्यापार मंच ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार, आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत बनाने और गैर-शुल्क बाधाएं कम करने पर विशेष चर्चा करेगा। शुक्रवार को प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति पुतिन के बीच द्विपक्षीय बातचीत भी होगी।

भारत की जीडीपी ग्रोथ को आईएमएफ ने अर्थव्यवस्था की क्षमता और मजबूती से जोड़ा

7.8 फीसदी की बढ़ोतरी सर्विस सेक्टर और एक्सपोर्ट में उम्मीद से ज्यादा गतिविधियों से हुई

नई दिल्ली, ।

भारत की अर्थव्यवस्था ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में उम्मीद से बेहतर प्रदर्शन किया है। इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड की प्रवक्ता जूली कोज़ैक ने भारत की आर्थिक रफ्तार को लेकर कहा कि दूसरी तिमाही में भारत की वास्तविक जीडीपी ग्रोथ 7.8 फीसदी रही, जो आईएमएफ के स्टाफ अनुमान और दूसरे आर्थिक जानकारों की उम्मीद से बेहतर है। जूली कोज़ैक के मुताबिक भारत की अर्थव्यवस्था में 7.8 फीसदी की बढ़ोतरी मुख्य रूप से सर्विस सेक्टर और एक्सपोर्ट में उम्मीद से ज्यादा गतिविधियों की वजह से हुई। इन दोनों क्षेत्रों ने आर्थिक विकास को मजबूत आधार दिया और ग्रोथ अनुमान से ऊपर पहुंच गई।

आईएमएफ की प्रवक्ता ने इस प्रदर्शन को भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती का संकेत बताया. खास बात यह है कि वैश्विक स्तर पर ऊर्जा की कीमतों में झटका देखने को मिल रहा है। इसके बावजूद भारत की आर्थिक गतिविधियों में तेजी बनी हुई है। दुनियाभर में ऊर्जा की कीमतों में तेजी का असर महंगाई, कारोबार और आर्थिक गतिविधियों पर पड़ता है।

भारत भी अपनी जरूरत का बड़ा हिस्सा कच्चे तेल के आयात से पूरा करता है। ऐसे माहौल में 7.8 फीसदी की जीडीपी ग्रोथ को आईएमएफ ने भारतीय अर्थव्यवस्था की क्षमता और मजबूती से जोड़ा है।

जूली कोज़ैक ने कहा कि यह प्रदर्शन दिखाता है कि बाहरी दबावों के बावजूद भारत की अर्थव्यवस्था अपनी रफ्तार बनाए रखने में सक्षम है। आईएमएफ के मुताबिक भारत की मजबूत आर्थिक वृद्धि का असर सिर्फ देश तक सीमित नहीं है।

भारत दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में तेजी से बढ़ने वाले देशों में शामिल है और वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक अहम ग्रोथ इंजन बना हुआ है। सर्विस सेक्टर, एक्सपोर्ट और घरेलू आर्थिक गतिविधियों में मजबूती भारत की ग्रोथ को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रही है. ऐसे में आने वाले समय में भी भारत की आर्थिक स्थिति पर दुनिया के बड़े निवेशकों और आर्थिक संस्थानों की नजर बनी रहेगी।

चार सालों से डिजिटल मीडिया में काम कर रहे हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय डेस्क की भी जिम्मेदारी संभालते हैं। सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ बिहार से 2022 में पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातक की डिग्री हासिल की। राजनीति, चुनाव, सामाजिक विषयों और साहित्य में रुचि है। तथ्यों की गहराई और भाषा की संवेदनशीलता पर जोर देते हैं। राजनीति से जुड़ी खबरों पर लगातार लिख रहे हैं।

एनएसई आईपीओ के लिए 1,700 से 1,785 प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय

-निवेशक 17 से लगा सकेंगे बोली, सब्सक्रिप्शन की अवधि 21 सितंबर तक रहेगी

नई दिल्ली।

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के बहुप्रतीक्षित आईपीओ को लेकर बड़ा अपडेट सामने आया है। एक्सचेंज ने आईपीओ के लिए 1,700 से 1,785 प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया है। आईपीओ में एक लॉट में आठ शेयर होंगे। इस हिसाब से अपर प्राइस बैंड पर रिटेल निवेशक को एक लॉट के लिए कम से कम 14,280 लगाने होंगे। एनएसई आईपीओ के लिए निवेशक 17 सितंबर से बोली लगा सकेंगे। आईपीओ में सब्सक्रिप्शन की अवधि 21 सितंबर तक है। वहीं, एंकर निवेशकों के लिए बोली प्रक्रिया 16 सितंबर तक होगी।आईपीओ में शेयरों का अलॉटमेंट 22 सितंबर को फाइनल हो सकता है। इसके बाद एनएसई के शेयरों की लिस्टिंग 24 सितंबर को प्रस्तावित है। एनएसई के शेयर बीएसई पर लिस्ट होंगे। आईपीओ में योग्य संस्थागत खरीदारों के लिए 50फीसदी हिस्सा आरक्षित रखा गया है। वहीं, 35फीसदी हिस्सा रिटेल निवेशकों और बाकी 15फीसदी हिस्सा नॉन-इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स के लिए रखा है। आईपीओ की बुक-रनिंग प्रक्रिया के लिए कोटक महिंद्रा केपिटल को लीड मैनेजर नियुक्त किया है। वहीं एमयूएफजी इनटाइम इंडिया लिमिटेड इश्यू का रजिस्ट्रार है।ग्रे मार्केट में एनएसई के शेयरों को फिलहाल अच्छा प्रीमियम मिल रहा है। शुक्रवार सुबह करीब 7:30 बजे एनएसई शेयर का ग्रे मार्केट भाव 2,007 था। यह आईपीओ के अपर प्राइस बैंड 1,785 से करीब 222 ज्यादा है यानी ग्रे मार्केट में एनएसई आईपीओ का जीएमपी करीब 222 या 12.4फीसदी था। हालांकि, ग्रे मार्केट प्रीमियम अनौपचारिक संकेतक होता है और इसमें लिस्टिंग के समय वास्तविक प्रदर्शन की गारंटी नहीं होती।

एनएसई का आईपीओ पूरी तरह ऑफर फॉर सेल होगा। मौजूदा शेयरधारक इस इश्यू के तहत अधिकतम 12.64 करोड़ इक्विटी शेयर बेचेंगे। पहले ओएफएस के तहत 14.9 करोड़ शेयर बेचने की योजना थी। ऑफर का आकार घटने के साथ एनएसई आईपीओ का कुल इश्यू साइज भी पहले के अनुमान से कम हो गया है। शुरुआती तौर पर आईपीओ का आकार करीब 30,000 करोड़ रहने का अनुमान था। ओएफएस में कंपनी को नए शेयर जारी करके पैसा नहीं मिलेगा। इसके बजाय मौजूदा शेयरधारक अपने शेयर बेचकर आईपीओ के जरिए हिस्सेदारी कम करेंगे।

घरेलू बाजार में सोने और चांदी में गिरावट

मुम्बई ।

घरेलू बाजार में शुक्रवार को सोने में 1,571 रुपये और चांदी में 2,530 की गिरावट आई है। ये गिरावट ब्याज दरों में बढ़ोतरी के कारण आई है।

इसके अलावा अमेरिका-ईरान संघर्ष के कारण बढ़ी थोक ऊर्जा कीमतों से उपजे मुद्रास्फीति के दबाव और फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों में बढ़ोतरी की बढ़ती आशंका से भी वैश्विक बाजारों में गिरावट दर्ज की गयी है। उत्पादक मूल्य सूचकांक (पीपीआई) के आंकड़े आने के बाद, अगले सप्ताह फेडरल रिजर्व द्वारा 25 बेसिस अंक की ब्याज दर बढ़ोतरी की संभावना 61फीसदी से बढ़कर लगभग 71फीसदी हो गई है। इसी कारण निवेशक सोने-चांदी से दूर हो गये।

घरेलू वायदा बाजार, मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने के अक्टूबर अनुबंध में 1,217 रुपये की बड़ी गिरावट देखी गई और यह 1,51,124 रुपये प्रति दस ग्राम पर कारोबार कर रहा था। सुबह बाजार खुलने पर यह अनुबंध 1,571 रुपये की गिरावट के साथ 1,50,770 रुपये के भाव पर खुला था, जबकि इसका पिछला बंद भाव 1,52,341 रुपये था। दिन के कारोबार में इसने 1,51,175 रुपये का उच्च और 1,50,695 रुपये का निचला स्तर छुआ।

भारत के व्यापार नियमों पर अमेरिका-यूरोपीय संघ ने जताई गहरी चिंता

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला से जुड़ने के प्रयासों पर नकारात्मक प्रभाव की आशंका

नई दिल्ली ।

भारत के दो सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार, अमेरिका और यूरोपीय संघ ने देश के नियामक और गैर-शुल्क व्यापार बाधाओं पर गंभीर चिंता व्यक्त की है। उनका कहना है कि ये बाधाएं भारत के आर्थिक उदारीकरण और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में एकीकरण के प्रयासों को कमजोर कर रही हैं। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में भारत की आठवीं व्यापार नीति समीक्षा के दौरान इन चिंताओं को प्रमुखता से उठाया गया।

उठाई गई प्रमुख चिंताओं में उच्च टैरिफ, सैनिटरी एवं फाइटोसैनिटरी (एसपीएस) उपाय, व्यापार के लिए तकनीकी बाधाएं (टीबीटी), गुणवत्ता नियंत्रण आदेश (क्यूसीओ), सेवाओं और डिजिटल व्यापार पर प्रतिबंध, स्थानीय सामग्री की आवश्यकताएं और सरकारी खरीद में बाधाएं शामिल हैं।

अमेरिका ने भारत सरकार के व्यापार समझौतों को आगे बढ़ाने के प्रयासों की सराहना की, लेकिन साथ ही शुल्कों में भारी कटौती करने, गैर-जरूरी एसपीएस एवं टीबीटी उपायों को हटाने, सेवाओं एवं डिजिटल व्यापार में बाधाएं खड़ी करने से बचने और विदेशी निर्यातकों व निवेशकों के साथ भेदभाव करने वाले नियमों को वापस लेने के लिए और कदम उठाने का आग्रह किया।

यूरोपीय संघ ने सीमा शुल्क की अनिश्चित प्रक्रियाओं, बोझिल एसपीएस आवश्यकताओं, बौद्धिक संपदा अधिकारों की सुरक्षा में कमियों और सरकारी खरीद तक पहुंच को सीमित किए जाने पर चिंता जताई। यूरोपीय संघ ने गुणवत्ता नियंत्रण आदेशों (क्यूसीओ) के बढ़ते उपयोग पर विशेष ध्यान दिया, यह कहते हुए कि ये घरेलू मानकों पर आधारित हैं और अंतरराष्ट्रीय स्तर से अलग व अनुपालन करने में मुश्किल हैं। यूरोपीय संघ ने चेतावनी दी कि इससे भारतीय बाजार के दुनिया की अर्थव्यवस्था से और अधिक अलग-थलग होने और आर्थिक प्रगति के पलटने का खतरा है।

फ़ूड सेफ़्टी विभाग ने ब्लिंकइट और ज़ेप्टो के डार्क स्टोर पर मारे छापे

गंदगी व एक्सपायर्ड फ़ूड आइटम मिले, 100 किलो पैकेट किए नष्ट, सेम्पल लैब भेजे

जयपुर, ।

घरों पर राशन और खाने-पीने का सामान पहुंचाने का दावा करने वाली ऐप-आधारित कंपनियों-ब्लिंकइट और ज़ेप्टो की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े हो गए हैं। राजस्थान के जयपुर में फ़ूड सेफ़्टी टीमों ने ब्लिंकइट और ज़ेप्टो के डार्क स्टोर की जांच की और वहां एक्सपायर हो चुके और गलत तरीके से रखे खाने-पीने के सामान पाए गए। इस कार्रवाई के तहत एक्सपायर सामान को नष्ट किया गया, सैंपल लिए गए और साफ-सफाई व स्टोरेज से जुड़ी कमियों को ठीक करने के निर्देश दिए। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इसके बाद अधिकारियों ने हजारों डेयरी पैकेट नष्ट कर दिए और लैब टेस्टिंग के लिए सैंपल लिए। ये छापेमारी फ़ूड सेफ़्टी विभाग की एक सेंट्रल टीम ने कंपनियों के डार्क स्टोर पर की, जो होम डिलीवरी के लिए हब का काम करते हैं। अधिकारियों ने बताया कि जांच के दौरान डेयरी प्रोडक्ट के करीब 2,350 पैकेट और बड़ी मात्रा में खराब फ़ूड आइटम मौके पर ही नष्ट कर दिए गए। जगतपुरा में जेप्टो के डार्क स्टोर पर, इंस्पेक्टरों को दूध, दही और छाछ के लगभग 1,550 पैकेट मिले, जिन्हें तय तापमान पर नहीं रखा गया था। नतीजतन, सारस और अमूल डेयरी प्रोडक्ट के करीब 1,550 पैकेट नष्ट कर दिए गए। इंस्पेक्टरों को 7 किलो एक्सपायर्ड फ़ूड आइटम भी मिले, जिनमें म्यूसली, कैंडी और भुजिया शामिल थे। इसके अलावा करीब 100 किलो खराब फ़ूड प्रोडक्ट, जिन पर बिक्री के लिए नहीं लिखा था, हटाकर नष्ट कर दिए गए।निरीक्षण टीम ने डार्क स्टोर और कोल्ड रूम एरिया के आसपास पान मसाला और ज़र्दा थूकने के निशान भी देखे। अधिकारियों ने स्टोर मैनेजमेंट को तुरंत साफ-सफाई और स्टोरेज के तरीकों में सुधार करने का निर्देश दिया। स्टोर मैनेजर की मौजूदगी में पीनट बटर और शहद के सैंपल लिए गए और टेस्टिंग के लिए सेंट्रल लैब भेजे गए।टीम ने आदर्श नगर में ब्लिंकइट के एक डार्क स्टोर का निरीक्षण किया, जहां उन्हें डेयरी उत्पादों के करीब 800 पैकेट और साथ ही बड़ी मात्रा में खराब और एक्सपायर हो चुके खाद्य पदार्थ मिले। जांच के दौरान अधिकारियों को खराब या एक्सपायर हो चुके स्टॉक मिले, जिनमें अमूल बटर के 24 पैकेट, बॉम्बे बंटा जूस की 60 बोतलें, कम फैट वाले दूध के 11 पाउच, ट्रॉपिकाना जूस, गाय का घी और लगभग 1,400 मिलीलीटर अमूल टोन्ड मिल्क शामिल थे।

त्योहारों पर लोगों को मिल सकती है चीनी के दामों में राहत, सरकार ने की तैयारी

करीब 2.5 लाख टन रिफाइंड चीनी बाजार में आने से कीमतों में आएगी नरमी

नई दिल्ली, ।

आगामी त्योहारों के दौरान मिठाइयों की मांग बढ़ने के साथ ही घरों में चीनी की खपत भी बढ़ जाती है। ऐसे समय में चीनी की कीमतों में तेजी आम लोगों का बजट बिगाड़ रही है। चीनी और सब्जियों समेत कई जरूरी खाद्य वस्तुओं की बढ़ती कीमतों के बीच अब सरकार और चीनी रिफाइनरियां घरेलू बाजार में आपूर्ति बढ़ाने की तैयारी कर रही है। इसके तहत करीब 2.5 लाख टन रिफाइंड चीनी बाजार में उतारने की तैयारी है। माना जा रहा है कि अतिरिक्त स्टॉक उपलब्ध होने से आने वाले दिनों में चीनी की कीमतों में नरमी आ सकती है।

रिफाइंड चीनी को आम तौर पर वही सफेद और चमकदार चीनी माना जाता है, जिसका इस्तेमाल घरों में चाय, मिठाई और अन्य खाद्य पदार्थों में किया जाता है। इसे कच्ची चीनी यानी रॉ शुगर या गन्ने के रस से कई प्रक्रियाओं के जरिए तैयार किया जाता है। रिफाइनिंग के दौरान अशुद्धियों को हटाकर चीनी को साफ और खाने योग्य बनाया जाता है। देश में कई चीनी रिफाइनरियां बंदरगाहों के आसपास स्थित हैं, जहां कच्चा माल बाहर से मंगाया जाता है। इसके बाद उसे कई प्रक्रियाओं से गुजारकर सफेद रिफाइंड चीनी तैयार की जाती है और घरेलू बाजार में बिक्री के लिए भेजा जाता है।

रिपोर्ट के मुताबिक चीनी की कीमतों को लेकर राहत की उम्मीद इसलिए भी बढ़ी है क्योंकि थोक बाजार में इसके भाव पहले की तुलना में नीचे आए हैं। कुछ समय पहले मिल से निकलने वाली चीनी की कीमत करीब 67 से 70 रुपए प्रति किलो तक पहुंच गई थी। अब एक्स-मिल और थोक बाजार में इसके भाव घटकर करीब 45 से 55 रुपए प्रति किलो के बीच आ गए हैं। हालांकि, थोक बाजार में आई इस गिरावट का असर फिलहाल खुदरा बाजार में पूरी तरह दिखाई नहीं दे रहा है। उपभोक्ताओं को अभी भी दुकानों पर चीनी 60 से 65 रुपए प्रति किलो के भाव में मिल रही है।

यदि बाजार में अतिरिक्त 2.5 लाख टन रिफाइंड चीनी की आपूर्ति होती है और उपलब्ध स्टॉक बढ़ता है, तो आने वाले दिनों में खुदरा कीमतों में भी कमी आ सकती है।

त्योहारों से पहले कीमतों में यह संभावित गिरावट आम लोगों के घरेलू बजट के लिए राहत लेकर आ सकती है।

फंड फ्लो में गिरावट से एएमसी शेयरों पर नुवामा का भरोसा बढ़ा, रिटर्न की उम्मीद

निप्पॉन लाइफ इंडिया एसेट मैनेजमेंट में अगस्त में 2,850 करोड़ का शुद्ध निवेश आया

नई दिल्ली,।

म्युचुअल फंड में निवेशकों का पैसा आना जारी है। अगस्त में इक्विटी म्युचुअल फंड में आने वाला पैसा बढ़ा है और एसआईपी के जरिए निवेश भी नए रिकॉर्ड पर पहुंच गया। हालांकि इस बीच एचडीएफसी एएमसी और निप्पॉन लाइफ इंडिया एसेट मैनेजमेंट में आने वाले निवेश में गिरावट देखने को मिली है। दोनों कंपनियों में अगस्त में आया शुद्ध निवेश जुलाई के मुकाबले करीब 11 फीसदी घट गया। इसके बावजूद ब्रोकरेज फर्म नुवामा को दोनों कंपनियों के शेयरों पर भरोसा है। ब्रोकरेज ने एचडीएफसी एएमसी और निप्पॉन एएमसी दोनों पर खरीदारी की राय बरकरार रखी है। इतना ही नहीं, नुवामा ने एसेट मैनेजमेंट कंपनियों में इन दोनों को अपनी पहली पसंद में भी रखा है।

अगस्त में एचडीएफसी एएमसी में 2,420 करोड़ रुपए का शुद्ध निवेश आया। जुलाई के मुकाबले यह 11.4 फीसदी कम है। कुल निवेश में कंपनी का हिस्सा भी घटा है। अगस्त में यह 1.40 फीसदी अंक घटकर 7.7 फीसदी रह गया। हाल के महीनों के मुकाबले यह कमजोर आंकड़ा है। हालांकि नुवामा का मानना है कि इस गिरावट को केवल एचडीएफसी एएमसी की परेशानी के तौर पर नहीं देखना चाहिए। बड़ी और पहले से बाजार में मजबूत पकड़ रखने वाली एसेट मैनेजमेंट कंपनियों में आने वाले निवेश की रफ्तार कुछ धीमी हुई है। एचडीएफसी एएमसी में आई गिरावट भी इसी का हिस्सा है। निप्पॉन लाइफ इंडिया एसेट मैनेजमेंट में अगस्त के दौरान 2,850 करोड़ का शुद्ध निवेश आया।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

बांग्लादेश के खिलाफ शांत रहते हुए पारी को बढ़ाने की कोशिश की: शेफाली वर्मा

दुबई, एजेंस। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने एशिया कप 2026 के फाइनल में जगह बना ली है। गुरुवार को हुए सेमीफाइनल मुकाबले में भारतीय टीम ने बांग्लादेश को हराकर फाइनल में जगह बनाई। भारतीय टीम की जीत में सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा की 64 रनों की विस्फोटक पारी की अहम भूमिका रही। शेफाली को उनकी बेहतरीन पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। वर्मा ने कहा कि उन्होंने गुरुवार को यहां महिला एशिया कप सेमीफाइनल में बांग्लादेश के खिलाफ मैच जिताने वाली 64 रन की पारी के दौरान मुश्किल बैटिंग पिच के हिसाब से खुद को ढालते हुए शांत रहने और टीम के लिए योगदान देने पर ध्यान दिया। शेफाली ने बीसीसीआई विमेन द्वारा जारी एक वीडियो में कहा, 'एक सलामी बल्लेबाज के तौर पर मैं कभी-कभी बड़े शॉट लगाती हूं और कभी-कभी बस शांत रहने और सिंगल लेने की कोशिश करती हूं, क्योंकि स्मृति भी साथ होती हैं। कभी-कभी, मैं बस टीम के लिए वहां रहने और पारी को आगे बढ़ाने की कोशिश करती हूं।' सीनियर खिलाड़ी और ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा ने शेफाली वर्मा की तारीफ करते हुए कहा, 'गेंद उनके पास वैसी नहीं आ रही थी जैसी वह चाहती थीं। पिछले मैच से अलग चुनौती थी, पिच भी मुश्किल थी, लेकिन उन्होंने खुद को शांत रखा और अपने शॉट्स पर भरोसा किया। यह देखना अच्छा था, और उनके शॉट्स को देखकर लगा कि उनकी मानसिकता स्पष्ट नजर आई। उन्हें पता था कि क्या करना है, और ये छोटी-छोटी चीजें उनकी मदद कर रही थीं।' दीप्ति ने कहा, 'मैं बहुत खुश हूं कि मुझे 2-3 या 4 बॉल खेलने को मिलीं, और मैं बस जल्द से जल्द ऐसी छोटी पारी खेलने का इंतज़ार कर रही थी। मैं बहुत खुश हूं कि मैं आखिरी कुछ गेंदों पर योगदान दे पाई। एक ऑल-राउंडर के तौर पर खेल के अलग-अलग विभाग में योगदान करना अहम है। जब आप तीनों डिपार्टमेंट्स में अपना बेस्ट करने जाते हैं, तो ज़ाहिर है आप एक कदम आगे होते हैं, चाहे वह बैटिंग हो, बॉलिंग हो या फील्डिंग।'

बायर्न ने चैंपियंस लीग के पहले मैच में बोडो/ग्लिम्ट को 5-0 से हराया

बर्लिन। जमाल मुसियाला ने बायर्न म्यूनिख की शुरुआती लाइनअप में वापसी करते हुए पहला गोल किया। इसकी मदद से जर्मन टीम ने यूईएफए चैंपियंस लीग में बोडो/ग्लिम्ट को 5-0 से हरा दिया। बायर्न ने शुरू से ही गेंद पर कब्जा बनाए रखा, लेकिन शुरुआत में मेहमान टीम की पांच लोगों की डिफेंसिव लाइन को तोड़ने में संघर्ष किया। लुइस डियाज को पांच मिनट बाद पहला हाफ में मौका मिला, जोशुआ किमिच के क्रॉस पर उन्होंने पास से हेडर मारा, लेकिन गोलकीपर निकिता हाइकिन ने उसे बचा लिया। किमिच का 22 मीटर का शॉट 33वें मिनट में पोस्ट के बाहर लगा, इससे पहले हाइकिन ने पहले हाफ के आखिर में मुसियाला और फिर किमिच को रोका। हाइकिन, जिन्हें बाद में सेव करते समय कमर में दिक्कत हुई, उनकी जगह हाफटाइम में जूलियन फे लुंड ने ले ली, और बायर्न को रीस्टार्ट के बाद सिर्फ दो मिनट में ही बढ़त मिल गई। हैरी केन को रोकने की कोशिश में व ब्लॉक हो गई, लेकिन मुसियाला ने लूज बॉल को पकड़ा और अपना शॉट बाएं कोने में मार दिया। केन ने 61वें मिनट में माइकल ओलिस की फ्री-किक डिलीवरी पर फे लुंड के पास से हेडर मारकर बढ़त दोगुनी कर दी। अल्फांसो डेविस ने 77वें मिनट में 17-मीटर का स्ट्राइक करके मैच को आसानी से खत्म कर दिया, जिसके छह मिनट बाद ओलिस ने लेनार्ट कार्ल के पास पर बायर्न के लिए चौथा गोल किया। बोडो/ग्लिम्ट का काम तब और मुश्किल हो गया जब 87वें मिनट में ओडिन ब्योर्टुफ्ट को पेनल्टी एरिया के पास ओलिस को गिराने के लिए रेड कार्ड दिखाया गया। ओलिस ने फिर स्टॉपेज टाइम में अपना डबल पूरा किया और विंसेंट कोम्पनी की टीम के लिए दूसरे हाफ में पांच गोल किए। जीत के बाद केन ने कहा, 'हम पहले हाफ में काफी बेहतर थे। हमें बस दरवाजा खुलने तक सब्र रखना था। दूसरे हाफ की शुरुआत में किए गए गोल ने गेम को आगे बढ़ाया और हम और मजबूत हुए।'

सबालेंका, रायबाकिना के खिलाफ नंबर 1 की चुनौती के लिए तैयार हैं

न्यूयॉर्क, एजेंसी। ऐलेना रायबाकिना से विश्व नंबर 1 रैंकिंग गंवाने पर आर्यना सबलेंका ने आखिरकार खुलकर अपनी बात रखी है। उन्होंने स्वीकार किया कि यूएस ओपन में अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद शीर्ष स्थान से हाथ फिसलते देखना थोड़ा अजीब लग रहा था। हालांकि, रायबाकिना के खिलाफ होने वाले रोमांचक फाइनल से पहले बेलारूसी खिलाड़ी इस हार पर ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहतीं। क्वार्टर फाइनल में किनवेन झेंग को 3-6, 6-1, 6-4 से हराकर रायबाकिना ने नंबर 1 रैंकिंग हासिल कर ली । इस जीत के साथ ही कजाख खिलाड़ी ने सबालेंका को पछाड़कर शीर्ष स्थान प्राप्त कर लिया और बेलारूसी खिलाड़ी के 99 सप्ताह के वर्चस्व को समाप्त कर दिया। इसके बाद रायबाकिना ने सेमीफाइनल में कोको गॉफ को हराकर फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली। सेमीफाइनल में जेसिका पेगुला को 7-5, 6-2 से हराने के बाद अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोलते हुए , सबलेंका ने स्वीकार किया कि रायबाकिना ने सीजन के मध्य में अपने प्रदर्शन में आई गिरावट के बावजूद शीर्ष स्थान हासिल करने के लिए पर्याप्त प्रदर्शन किया है। 'मैं अच्छी तरह समझती हूं कि विश्व नंबर 1 बनना कितना मुश्किल है। यह मेरा एक लक्ष्य था। लेकिन अभी मैं कुछ खास नहीं कर सकती। सीजन के मध्य में मेरा प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। एलेना ने कमान संभाली और बहुत अच्छा खेला,' सबलेंका ने कहा। 28 वर्षीय खिलाड़ी अब लगातार चौथी बार यूएस ओपन के फाइनल में पहुंच चुकी हैं, जिससे उन्हें रैंकिंग में गिरावट के बावजूद टूर्नामेंट को एक और ग्रैंड स्लैम खिताब के साथ समाप्त करने का मौका मिल गया है। 'मैं सिर्फ खुद पर ध्यान केंद्रित कर सकती हूं और वर्तमान क्षण में रहकर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की कोशिश कर सकती हूं। बस इसे बरकरार रखना है और शायद मैं उससे यह खिताब वापस ले लूं,' उसने आगे कहा।

फाइनल में रायबाकिना का सामना होगा

फाइनल में पहुंचकर सबलेंका को शीर्ष स्थान से हटकर अपनी जगह बनाने वाली खिलाड़ी के खिलाफ खुद को परखने का सीधा मौका मिलेगा। रायबाकिना अपना पहला यूएस ओपन खिताब जीतने की कोशिश में हैं, जबकि सबलेंका न्यूयॉर्क में लगातार तीसरी चैंपियनशिप जीतने का प्रयास कर रही हैं। सबलेंका को पता है कि आगे क्या चुनौती है। रायबाकिना ने अपनी शानदार सर्विस और आक्रामक बेसलाइन गेम के दम पर पूरे टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन किया है, वहीं गौफ के खिलाफ उनकी वापसी ने यह साबित कर दिया कि जब मैच कड़े हो जाते हैं तो वह दबाव को भी झेल सकती हैं। हालांकि, सबलेंका के लिए स्थिति स्पष्ट है। रैंकिंग में फिर से बदलाव हो सकता है, और वह जानती है कि खुद को फिर से मुकाबले में लाने के लिए उसे क्या करना होगा। उन्होंने कहा, 'हर कोई एक-दूसरे का पीछा कर रहा है। यह सब छोटी-छोटी चीजों में सुधार करने और बेहतर बनने के बारे में है।' शनिवार को, यूएस ओपन ट्रॉफी की दौड़ में नई विश्व नंबर 1 और उनकी पूर्ववर्ती खिलाड़ी सबसे बड़े मंच पर आमने-सामने होंगी।

सबालेंका ने नंबर 1 बदलाव को स्वीकार किया

रैंकिंग में बदलाव के समय ने स्थिति को विशेष रूप से असामान्य बना दिया है। सबालेंका एक बार फिर न्यूयॉर्क में बेहतरीन खिलाड़ियों में से एक रही हैं और फाइनल में अपने खिताब का बचाव करेंगी, फिर भी रायबाकिना के शानदार प्रदर्शन ने उनसे शीर्ष रैंकिंग छीन ली। सबलेंका ने स्वीकार किया कि उन्हें इस बात को स्वीकारना मुश्किल लगा, लेकिन उन्होंने जोर देकर कहा कि यह अंततः टेनिस की प्रतिस्पर्धी प्रकृति का ही एक हिस्सा है। 'यह थोड़ा अजीब लगता है कि आप टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन करें और फिर भी आपसे नंबर 1 स्थान छीन लिया जाए। कोई बात नहीं। यही तो खेल है। मुझे यह पसंद है। यही तो खेल की खूबसूरती है,' उन्होंने कहा। न्यूयॉर्क पहुंचने से पहले ही रायबाकिना रैंकिंग में अंतर कम कर रही थीं और फाइनल में पहुंचकर उन्होंने निर्णायक बढ़त हासिल कर ली। गौफ पर उनकी जीत का मतलब है कि वह शनिवार को होने वाले फाइनल में विश्व की नंबर 1 खिलाड़ी के रूप में उतरेंगी।

नवांग त्सेरिंग ने जीता 'लद्दाख मैराथन'

- 122 किलोमीटर की दूरी रिकॉर्ड समय में पूरा किया

लद्दाख, एजेंस। अपनी प्रतिभा को पहचानकर कोई भी अगर उस पर कड़ी मेहनत करता है और निखारने की लगातार कोशिश करता है, तो एक न एक दिन उसे बड़ी सफलता जरूर मिलती है। नवांग त्सेरिंग की कहानी कुछ ऐसी ही है। नवांग ने लद्दाख मैराथन जीतकर रिकॉर्ड बनाया है। नवांग त्सेरिंग ने लद्दाख मैराथन में 122 किलोमीटर सिल्क रूट अल्ट्रा (एसआरयू) की दूरी को 12 घंटे, 12 मिनट और 18 सेंकड (12:12:18) में पूरा कर रिकॉर्ड बनाते हुए पहला स्थान हासिल किया है। त्सेरिंग का यह पहला प्रयास था और पहले ही प्रयास में वह चैंपियन बनकर निकले हैं। लद्दाख मैराथन जीतने के बाद आईएएनएस से खास बातचीत में नवांग ने कहा, 'मैंने लद्दाख मैराथन सिल्क रुट अल्ट्रा (एसआरयू) में पहली बार हिस्सा लिया था और पहले प्रयास में ही पहला स्थान हासिल किया है। यह काफी मुश्किल और चुनौतीपूर्ण था। मेरी मांसपेशिया काफी सख्त हो गई थीं। प्रतिस्पर्धा काफी कड़ी थी। इस साल मैंने (12:12:18) रिकॉर्ड बना दिया है।' नवांग ने अपनी सफलता का श्रेय अपने सभी कोचों, सहयोगियों और प्रशासन को दिया। मैराथन में आने से जुड़े सवाल पर नवांग ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं अपने दोस्तों को देखकर मैराथन में आया हूं। मैं उन लोगों को देखता था। वे दूसरे राज्यों में जाते थे। वही, देखकर मैंने मैराथन में आने का फैसला किया।' युवाओं को संदेश देते हुए नवांग ने कहा, 'मैं युवाओं से यह कहना चाहता हूं कि आप सभी अपनी प्रतिभा को बर्बाद मत कीजिए। अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करिए। मैं यह नहीं कह रहा कि सभी दौड़ में ही आगे आएं। सभी के पास एक खास प्रतिभा होती है। आप उस प्रतिभा को निखारिए और उसमें आगे बढ़िए।' नवांग की सफलता निश्चित रूप से उन युवाओं के लिए प्रेरणा है जो अभावों के बीच बड़ी उपलब्धि हासिल करने का प्रयास कर रहे हैं।

कुलदीप यादव ने 10 विकेट लेकर इंग्लैंड में काटा गदर

टीम को दिलाई जीत

यॉर्कशर ने एसेक्स को पारी और 106 रनों से मात दी। इस मैच में कुलदीप ने कुल 10 विकेट अपने नाम किए। उन्होंने पहली पारी में चार विकेट लिए तो वहीं दूसरी पारी में छह विकेट अपने नाम किए। रन खर्च करने के मामले में भी कुलदीप कंजूस ही रहे। उन्होंने पहली पारी में 70 रन खर्च किए और दूसरी पारी में 50 रन। यहां तक की कुलदीप ने अपने बल्ले से भी टीम की जीत में अहम योगदान दिया।

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय टीम में लगातार नजरअंदाज किए जाने वाले चाइनामैन गेंदबाज कुलदीप यादव इस समय इंग्लैंड में काउंटी क्रिकेट खेल रहे हैं। कुलदीप ने यॉर्कशर की जर्सी पहनी है और अपनी फिरकी पर अंग्रेज बल्लेबाजों को जमकर नचाया है। उन्होंने एसेक्स के खिलाफ खेले गए मैच में 10 विकेट लेकर अपनी काबिलियत को फिर सिद्ध किया है और टीम इंडिया के मैनेजमेंट को एक कड़ा संदेश भी दिया है। कुलदीप को टी20, वनडे और टेस्ट में नियमित मौके नहीं मिल रहे हैं। गौतम गंभीर ने जब से टीम इंडिया के कोच का पद संभाला है तब से कुलदीप को नियमित रूप से प्लेइंग-11 में जगह नहीं मिली है, लेकिन इंग्लैंड में इस गेंदबाज ने जो किया है उसने गंभीर को भी सोचने को मजबूर कर दिया होगा।

क्या बदलेगा प्लान?

कुलदीप के इस प्रदर्शन के बाद सवाल ये है कि क्या टीम मैनेजमेंट उन्हें लेकर अपने प्लान में बदलाव करेगा? हाल ही में श्रीलंका दौरे पर कुलदीप को नजरअंदाज किया गया था। स्पिनरों की मददगार पिचों पर कुलदीप को नजरअंदाज करना भारत को भारी पड़ सकता है। वह अपनी फिरकी से इंग्लैंड में बल्लेबाजों के लिए काल बन चुके हैं तो उपमहाद्वीप में तो वह और ज्यादा खतरनाक साबित हो सकते हैं।

टेस्ट जर्सी के लिए अर्शदीप झोंक रहे हैं पूरी ताकत

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत की टी20 टीम के अहम सदस्य अर्शदीप सिंक का सपना भी हर क्रिकेटर की तरह टेस्ट क्रिकेट खेलना है। वह चाहते हैं कि लाल गेंद से भी अपनी स्विंग का कमाल दिखाएं। अभी तक वह सीमित ओवरों में ही चमके हैं और टेस्ट गेंदबाज के तौर पर भी अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। इसलिए वह फर्स्ट क्लास क्रिकेट को नजरअंदाज नहीं करते है। उनको पता है कि टेस्ट खेलने के सपने को पूरा करने की राह में प्रथम श्रेणी क्रिकेट अधिक नहीं खेलने को आदर्श तैयारी नहीं माना जा सकता, लेकिन उनका कहना है कि यह पारंपरिक प्रारूप के लिए उनकी तैयारी में कमी को नहीं दर्शाता है।

क्षमता पर है यकीन

दलीप ट्रॉफी के बाद शेर ए पंजाब टीम लुधियाना लॉयंस से जुड़े अर्शदीप ने कहा कि प्रथम श्रेणी क्रिकेट में लंबा अंतराल तैयारी के लिए आदर्श नहीं है, लेकिन मैं उन्हीं चीजों पर फोकस कर सकता हूं जिससे मौका मिलने पर तैयार रह सकूं। टेस्ट क्रिकेट खेलना सम्मान की बात है और मुझे इसका इंतजार है। मुझे अपनी क्षमता पर यकीन है कि मैं भारत के लिये योगदान दे सकता हूं।

हर कोशिश जारी

सीमित ओवरों के प्रारूप में भारत के शीर्ष गेंदबाजों में से एक अर्शदीप ने दिसंबर 2019 में पदार्पण के बाद से सिर्फ 24 प्रथम श्रेणी मैच खेले हैं। दलीप ट्रॉफी के दो मैच खेलने से पहले उन्होंने एक साल तक कोई प्रथम श्रेणी मैच नहीं खेला था। अर्शदीप ने समाचार एजेंसी पीटीआई को दिए साक्षात्कार में कहा कि मैं टेस्ट क्रिकेट खेलने के लिए अपनी ओर से हरसंभव प्रयास कर रहा हूं।

एशियन गेम्स स्क्वॉड से अन्नू रानी बाहर

क्वालिफिकेशन मार्क नहीं छू पाईं, चोट से लौटे अविनाश साबले ने स्टीपलचेज में जगह पक्की की

नई दिल्ली, एजेंसी। हांगझोउ एशियन गेम्स की गोल्ड मेडलिस्ट अन्नू रानी जापान एशियन गेम्स के भारतीय स्क्वॉड से बाहर हो गई हैं। वे महिलाओं की जैवलिन थ्रो में क्वालिफिकेशन मार्क हासिल नहीं कर सकीं। अन्नू ने गुरुवार को छ्रस्ह स्टेडियम में इंडियन एथलेटिक्स फाइनल सीरीज में 57.50 मीटर का थ्रो किया। वह 57.62 मीटर के क्वालिफिकेशन मार्क से 12 सेंटीमीटर पीछे रह गईं।

अविनाश साबले की वापसी – इसी इवेंट में चोट से लौटे अविनाश साबले ने 3,000 मीटर स्टीपलचेज में गोल्ड जीता। उन्होंने 8:32.39 सेकेंड का समय निकालकर 8:36.57 सेकेंड का क्वालिफिकेशन मार्क हासिल किया। एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया ने प्रतियोगिता से पहले खिलाड़ियों को साफ कर दिया था कि एशियन गेम्स में जाने के लिए क्वालिफिकेशन मार्क हासिल करना जरूरी है। स्रद्ध प्लानिंग कमेटी के चेयरमैन ललित भनोत ने कहा, जिसने क्वालिफिकेशन मार्क हासिल नहीं किया है, उसे एशियन गेम्स में नहीं भेजा जाएगा। स्रद्ध का रुख बिल्कुल साफ था। उन्होंने कहा, अगर अन्नू रानी क्वालिफाई नहीं कर पाई हैं, तो वे नहीं जाएंगी। जिन खिलाड़ियों ने मार्क हासिल नहीं किया है, वे दल का हिस्सा नहीं होंगे।

अविनाश 14 महीने तक चोट से बाहर रहे – 31 साल के अविनाश साबले 14 महीने तक चोट के कारण बाहर रहने के बाद अपनी 3,000 मीटर स्टीपलचेज स्पर्धा में लौटे। उन्होंने 8:32.39 सेकेंड के समय के साथ गोल्ड जीता। उनका समय 8:36.57 सेकेंड के एशियन गेम्स क्वालिफिकेशन मार्क से बेहतर रहा।

19 सितंबर से शुरू होगा इवेंट – एशियन गेम्स 2026 का 19 सितंबर से 4 अक्टूबर 2026 तक जापान के आइची-नागोया में खेला जाएगा। यह एशियन गेम्स का 20वां संस्करण है। इसमें एशिया के 45 देशों के खिलाड़ी अलग-अलग खेलों में हिस्सा लेंगे। भारतीय दल भी एथलेटिक्स, शूटिंग, बॉक्सिंग, कुश्ती, बैडमिंटन, हॉकी, तीरंदाजी, कबड्डी और क्रिकेट समेत कई खेलों में चुनौती पेश करेगा।

संक्षिप्त समाचार

मदद से पीछे हटे अमेरिका जैसे देश, ट्रंप के फैसले से राहत कार्यों को लगा बड़ा झटका

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल में अगस्त के अंत में ग्लेशियर टूटने से आई सदी की सबसे भीषण बाढ़ और भूस्खलन के दो हफ्ते बाद भी राहत कार्यों में भारी लाचारी देखने को मिल रही है। नेपाल और पड़ोसी तिब्बत में 1,300 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है और करीब 5,000 लोग अब भी लापता हैं। इस मानवीय संकट के बीच अमेरिकी विदेशी सहायता एजेंसी यूएस एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट (यूएसएआईडी) का पूरी तरह गायब रहना राहत और बचाव कार्यों पर भारी पड़ रहा है। ट्रंप प्रशासन ने पिछले साल की शुरुआत में यूएसएआईडी को बंद कर दिया था सीधा असर अब जमीन पर दिख रहा है। नेपाल में अमेरिकी फंड से चलने वाले कई गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) को अपने कार्यक्रम बंद करने पड़े थे, जिससे अचानक आई इस आपदा के समय वे त्वरित राहत सामग्री और संसाधन उपलब्ध कराने में असमर्थ साबित हो रहे हैं। भारत ने बुधवार को विनाशकारी बाढ़ की मार झेल रहे नेपाल के लिए मानवीय सहायता की 7वीं खेप भेजी। भारतीय वायुसेना के विशेष सी-17 परिवहन विमान के जरिये 35 टन सामान और उपकरण भेजे गए हैं। भारत लगातार बाढ़ प्रभावित नेपाल को राहत सामग्री और आवश्यक दवाएं भेज रहा है। 2015 का भूकंप : भूकंप के 48 घंटे के भीतर अमेरिका ने 128 सदस्यीय विशेषज्ञ आपदा प्रतिक्रिया दल भेजा था और तुरंत 1 करोड़ डॉलर की मानवीय मदद का ऐलान किया था।

ईरान युद्ध का असर: ट्रंप बोले- चुनाव के बाद ही गिरेंगे तेल के दाम; रिपब्लिकन खेमे की क्यों बढ़ी चिंता

वाशिंगटन,एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को कहा कि ईरान युद्ध की वजह से बढ़े तेल के दाम जल्द नीचे आने की उम्मीद नहीं है। उन्होंने कहा कि तेल की कीमतों में गिरावट अमेरिकी मध्यावधि चुनाव के बाद ही शुरू हो सकती है। बुधवार को तेल की कीमतों में 3 फीसदी से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई। अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट कच्चा तेल 100 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच गया। जुलाई के बाद पहली बार ऐसा हुआ है। इस्राइल और अमेरिका की ओर से ईरान के खिलाफ चल रहे युद्ध के बीच दोनों तरफ से हमले तेज हुए हैं। ट्रंप ने कहा, चुनाव के तुरंत बाद तेल की कीमतें तेजी से नीचे आएंगी। उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि इसमें मध्यावधि चुनाव से थोड़ा ज्यादा समय लग सकता है। ट्रंप यह बात डलास जाने से पहले पत्रकारों से बातचीत में कह रहे थे। वह वहां मध्यावधि चुनाव के लिए रिपब्लिकन पार्टी के सम्मेलन में जाने वाले थे।

फिलहाल शामिल होने का फैसला टाल सकता है बांग्लादेश, रणनीतिक शर्तों पर अटकी बात

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश ने सऊदी अरब, तुर्किये और पाकिस्तान के मक्का रक्षा गठबंधन में शामिल होने का दरवाजा खुला रखा है। हालांकि सैन्य शर्तों और जिम्मेदारियों का पुरा खाका सामने आने तक वह अंतिम फैसला टालने के मूड में दिखाई दे रहा है। इसके तहत किसी एक सदस्य पर हमला बाकी सदस्यों के खिलाफ भी हमला माना जाएगा। बांग्लादेशी रणनीतिक हलकों में सवाल है कि किसी सदस्य पर हमले की स्थिति में ढाका की सैन्य प्रतिबद्धता किस सीमा तक होगी। रिटायर्ड मेजर जनरल फजले इलाही अकबर ने अखबार प्रोथोम आलो में कहा कि सदस्यता पर फैसला लेने से पहले समझौते की हर शर्त और धारा की गहन जांच होनी चाहिए। साथ ही संसद, राजनीतिक दलों और अन्य हितधारकों से व्यापक मशविरा होना चाहिए। विदेश राज्य मंत्री शमा ओबैद ने कहा कि ढाका स्थिति का आकलन कर रहा है और किसी भी फैसले में राष्ट्रीय हित प्राथमिकता होगी। विदेश राज्य मंत्री हुमायूं कबीर ने पहले कोई जोखिम न दिखने की बात कही थी। विदेश मंत्री खलीलुर रहमान संसद में कह चुके हैं कि अगर मौजूदा सदस्य बांग्लादेश को शामिल करना चाहें तो ढाका प्रस्ताव पर सकारात्मक विचार करेगा। जहां एक तरफ इसके समर्थक इसे सैन्य क्षमता मजबूत करने का अवसर मानते हैं। वहीं पूर्व राजनयिक एम. हुमायूं कबीर ने चेताया है कि इस गठबंधन में शामिल होना बांग्लादेश की पांच दशक पुरानी संतुलित और गैर-गुटीय विदेश नीति में बदलाव होगा। सबसे संवेदनशील पहलू पाकिस्तान है। सदस्यता लेना सीधे द्विपक्षीय सैन्य गठबंधन में शामिल होना नहीं होगा, लेकिन दोनों देशों की सेनाओं और सुरक्षा प्रतिष्ठानों के बीच सहयोग बढ़ सकता है। इससे ढाका की विदेश नीति पर सवाल खड़े हो सकते हैं।

अमेरिका में भारतीय दंपती की दरियादिली: एआई को बढ़ावा देने के लिए कॉलेज को दिए 191 करोड़, आंध्र से है कनेक्शन

वाशिंगटन, एजेंसी। भारतीय मूल के एक दंपती ने टेक्सास में अपनी पुरानी यूनिवर्सिटी अल्मा मेटर को 20 मिलियन डॉलर का दान दिया है। इससे संस्थान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और एडवांस्ड एनालिटिक्स की पढ़ाई को बढ़ावा मिलेगा और 'अमेरिकन ड्रीम' को साकार करने में अप्रवासियों के योगदान को भी रेखांकित किया जाएगा। एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, अनुराधा और विकास सिन्हा ने यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास को 20 मिलियन डॉलर यानी कि भारतीय रुपयों में 191 करोड़ से ज्यादा का दान दिया है।

अनुराधा और विकास सिन्हा के नाम पर बनेगा नया कॉलेज

इस तोहफे के सम्मान में, यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास 'अनुराधा और विकास सिन्हा कॉलेज ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड एडवांस्ड एनालिटिक्स' की स्थापना करेगा। यह कॉलेज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इंटेलिजेंट सिस्टम और डेटा एनालिटिक्स पर केंद्रित एक एकेडमिक और रिसर्च हब के तौर पर काम करेगा। यह एआई, साइबर सिक्योरिटी, डेटा साइंस, एडवांस्ड एनालिटिक्स, हेल्थ इंफॉर्मेटिक्स, इंफॉर्मेशन साइंस, लाइब्रेरी साइंस और लर्निंग टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञता को एक साथ लाएगा।

यूएनटी से सिन्हा परिवार का पुराना जुड़ाव : यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास में सिन्हा परिवार का निवेश यूनिवर्सिटी के साथ उनके

जुड़ाव के साथ-साथ बढ़ता गया है। 2024 में, उन्होंने 'अनुराधा और विकास सिन्हा डिपार्टमेंट ऑफ डेटा साइंस' की स्थापना के लिए तोहफा दिया, साथ ही स्कॉलरशिप, फैकल्टी, रिसर्च और विशेष पहलों को सपोर्ट करने के लिए एंडोमेंट भी दिए। एक साल बाद, उन्होंने एक और बड़ा तोहफा दिया और 'सिन्हा इनोवेशन लैब फॉर डेटा साइंस' की स्थापना की।

'शिक्षा ने हमारे लिए दरवाजे खोले हैं' : दान के बाद मीडिया से बात करते विकास सिन्हा ने कहा, 'शिक्षा ने हमारे जीवन भर हमारे लिए दरवाजे खोले हैं, और हम दूसरों के लिए भी उन दरवाजों को खुला रखना चाहते हैं।' यही एक बड़ी वजह है कि अनु और मुझे इस बात पर इतना पक्का भरोसा है कि यूएनटी छात्रों के लिए क्या कुछ मुमकिन बना सकता है, जिसमें वे छात्र भी शामिल हैं जो शायद किसी दूसरे देश से वही महत्वाकांक्षा और शिक्षा में वही विश्वास लेकर यहां आते हैं, जो कभी हमारे पास हुआ करता था।' हमारे लिए, यह तोहफा उस अवसर को आगे बढ़ाने और यह मानने के बारे में है कि अप्रवासी सिर्फ 'अमेरिकन ड्रीम' में हिस्सा ही नहीं लेते, वे इसे बनाने में मदद भी करते हैं।'

एआई के भविष्य को आकार देने वालों को तैयार करेगा यूएनटी : उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हमारी पीढ़ी की अहम टेक्नोलॉजी में से एक होगी, और इसके भविष्य को आकार देने वाले लोगों को तैयार करने में यूनिवर्सिटी की अहम भूमिका है। यूएनटी के विजन के बारे में जो बात हमें उत्साहित करती है, वह यह है कि यह छात्रों को सिर्फ एआई का इस्तेमाल करना सिखाने से कहीं आगे जाएगा। यह उन्हें इंटेलिजेंट सिस्टम बनाने, समझने, उन पर सवाल उठाने, उन्हें चलाने और जिम्मेदारी से इस्तेमाल करने के लिए तैयार करेगा। इससे इंटेलिजेंट सिस्टम बनाने वाले और उनकी देखभाल करने वाले, दोनों तरह के लोग तैयार होंगे।

छह स्थायी फंड बनाए जाएंगे : 20 मिलियन डॉलर का यह दान छह स्थायी फंड (एंडोमेंट) बनाएगा, जो कॉलेज की लीडरशिप, छात्रों की स्कॉलरशिप, एंडोव्ड प्रोफेसरशिप, एंटरप्रेन्योरशिप और इनक्यूबेशन, एडवांस्ड रिसर्च और नई टेक्नोलॉजी को सपोर्ट करेंगे।

दो एकेडमिक डिवीजन में बांटा जाएगा कॉलेज : कॉलेज को दो एकेडमिक डिवीजन में बांटा जाएगा: 'डिवीजन ऑफ एप्लाइड इंटेलिजेंस एंड इंफॉर्मेटिक्स', जो इंटेलिजेंट सिस्टम बनाने और उन्हें लागू करने पर केंद्रित होगा; और 'डिवीजन ऑफ इंफॉर्मेशन एंड लर्निंग एप्लीकेशन', जो इस बात पर केंद्रित होगा कि जानकारी और इंटेलिजेंट सिस्टम इंसानी और संस्थागत संदर्भों में कैसे काम करते हैं।

एआई और डेटा साइंस रिसर्च को मिलेगा बढ़ावा : बयान में कहा गया है कि कॉलेज में 'एप्लाइड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड डेटा साइंस इंस्टीट्यूट' भी होगा, जो यूएनटी में एआई और एनालिटिक्स रिसर्च और एजुकेशन को जोड़ेगा और इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च, साझा इंफ्रास्ट्रक्चर, बाहरी रिसर्च फंडिंग और इंडस्ट्री पार्टनरशिप के लिए मौके पैदा करेगा।

आंध्र प्रदेश से अमेरिका तक का सफर : आंध्र प्रदेश के कुरनूल में श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी और जी पुल्ला रेड्डी इंजीनियरिंग कॉलेज में सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के बाद, विकास और अनुराधा आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका आए और फ्लोरिडा अटलांटिक यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएट डिग्री हासिल की। बाद में विकास ने नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी में अपनी पढ़ाई जारी रखी और 2023 में यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास से पीएचडी पूरी की। विकास अभी ब्रॉडकॉम में मेनफ्रेम सॉफ्टवेयर डिवीजन के वाइस प्रेसिडेंट हैं।

भारतीय कंपनियों ने डेटा चुराया: अमेरिकी सीनेटरों ने की ब्लैक लिस्ट में डालने की मांग, क्या है पूरा मामला

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी सीनेटरों ने ट्रंप प्रशासन को पत्र लिखकर भारत की तीन कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। डेमोक्रेटिक सीनेटर रॉन वाइडेन और शेल्डन व्हाइटहाउस तथा रिपब्लिकन पैट हैरिगन ने कॉमर्स सेक्रेटरी हॉवर्ड लटनिक से सनकिस्ड ऑर्गेनिक प्राइवेट लिमिटेड, बेलट्रॉक्स लिमिटेड और साइबररूट लिमिटेड के खिलाफ कार्रवाई करने का आग्रह किया है। उनका कहना है कि इन कंपनियों ने हजारों अमेरिकियों और अमेरिकी कंपनियों का डेटा हैक करके चुराया।

15 साल से अमेरिकी नागरिकों को निशाना बनाने का आरोप : वाइडेन, हैरिगन और व्हाइटहाउस ने लटनिक को लिखे पत्र में कहा,'भारत स्थित कई साइबर-मर्सिनरी ग्रुप (किराये के साइबर हैकर ग्रुप) 15 से अधिक वर्षों से अमेरिकी नागरिकों, व्यवसायों और उनका प्रतिनिधित्व करने वाले वकीलों के खिलाफ टारगेटेड जासूसी कर रहे हैं।' सीनेटरों ने कहा कि रॉयटर्स और द सिटिज़न लैब की जांच के अनुसार, इन कंपनियों ने चल रहे मुकदमों को प्रभावित करने के लिए प्राइवेट इक्विटी फर्मों, फार्मास्युटिकल कंपनियों और प्रमुख अमेरिकी लॉ फर्मों के 1,000 से अधिक वकीलों को निशाना बनाकर बड़े पैमाने पर हैकिंग अभियान चलाए।

कतर सरकार के इशारे पर काम करने का आरोप : उन्होंने कहा कि इस बात के सबूत हैं कि ये समूह कतर सरकार के इशारे पर काम करते थे। वर्ल्ड कप बोली के विरोधियों और हाउस परमानेंट सेलेक्ट कमिटी ऑन इंटेलिजेंस के पूर्व रिपब्लिकन चेयरमैन के परिवार को भी निशाना बनाया। सीनेटरों ने कहा,'इस सुरक्षा खतरे को और बढ़ाते हुए, इन साइबर मर्सिनरी और उनके सहयोगियों ने प्रमुख अमेरिकी मीडिया संगठनों की खोजी रिपोर्टिंग को सेंसर करने के लिए ग्लोबल लॉफेयर का आक्रामक अभियान चलाया है।' यह समन्वित प्रयास विदेशी संस्थाओं को विदेशी अदालतों का उपयोग करके अमेरिकी जनता को उनके अपने देश के लिए साइबर खतरों के बारे में अंधेरे में रखने की अनुमति देता है और अमेरिकी नागरिकों के मौलिक संवैधानिक अधिकारों को कमजोर करता है। सीनेटरों ने आरोप लगाया कि इन्हीं कंपनियों ने विदेशी अदालतों का दुरुपयोग करके अपने हैकिंग अभियानों के बारे में हो रही रिपोर्टिंग को सेंसर करने की भी कोशिश की। उन्होंने कहा कि अपनी आलोचना को दबाने और अपने अवैध हैकिंग अभियानों से जुड़े तथ्यों को छिपाने के लिए इन भारतीय कंपनियों ने गूगल, मेटा, माइक्रोसॉफ्ट और द न्यू यॉर्कर सहित अमेरिकी टेक्नोलॉजी और मीडिया कंपनियों के खिलाफ मुकदमे दायर कर रखे हैं।

फिलीपींस में समंदर के बीच नाव बनी आग का गोला: पांच यात्रियों की मौत और 87 लापता

मनीला, एजेंसी। फिलीपींस में बुधवार को एक यात्री फेरी में अचानक आग लग गई। हादसा देश के पश्चिमी हिस्से में समुद्र में हुआ। आग लगने के बाद बड़ी संख्या में लोग लापता हो गए। फिलीपींस कोस्ट गार्ड के मुताबिक, हादसे में अब तक कम से कम पांच लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 42 लोगों को सुरक्षित बचाया गया है। बचाव अभियान अभी जारी है, इसलिए लापता लोगों की संख्या आगे बदल सकती है। फिलीपींस कोस्ट गार्ड की प्रवक्ता कमोडोर नोएमी कायाबायब ने बताया कि फेरी पर कुल 134 लोग सवार थे। इनमें 117 यात्री और 17 चालक दल के सदस्य शामिल थे। आग लगने के बाद कई लोगों का पता नहीं चल पाया। अधिकारियों की ओर से फिलहाल 87 लोगों के लापता होने की जानकारी दी गई है, लेकिन बचाव और तलाश का अभियान जारी रहने के कारण यह आंकड़ा बदल सकता है। एमवी जून एस्टर मनीला से रवाना हुई थी। जब फेरी पलावन प्रांत में कोरोन के पास समुद्र में थी, उसी दौरान बुधवार को उसमें आग लग गई। आग लगने के बाद फेरी पर सवार लोगों के बीच अफरातफरी की स्थिति बनी। हादसे की जगह पश्चिमी फिलीपींस के समुद्री क्षेत्र में बताई गई है। उपलब्ध जानकारी में आग लगने की वजह के बारे में कोई कारण नहीं बताया गया है। कोस्ट गार्ड के मुताबिक, अब तक 42 लोगों को बचाया जा चुका है, जबकि 87 लोग लापता हैं। हालांकि, अधिकारियों ने साफ किया है कि यह अंतिम आंकड़ा नहीं है। कोस्ट गार्ड की टीमें लगातार बचाव अभियान चला रही हैं और लोगों की तलाश की जा रही है। घटनास्थल की तस्वीरों में कोस्ट गार्ड के जवान बचे हुए लोगों को लाइफ जैकेट फेंकते हुए दिखाई दिए, जबकि पीछे फेरी जल रही थी। छोटी नावों के जरिए भी बचे हुए लोगों को कम गहरे पानी तक लाया गया। फिलीपींस के द्वीपसमूह में फेरी परिवहन का एक आम जरिया है। तूफ़ान, खराब रखरखाव वाली नावें, क्षमता से ज़्यादा लोगों का सवार होना और सुरक्षा नियमों का ठीक से पालन न होना जैसी वजहों से समुद्री दुर्घटनाएं होती रहती हैं।

'कॉकरोच बन जाऊं, शायद जिंदगी बेहतर हो': विजय माल्या का बयान; भगोड़ा कहे जाने पर अब क्या बोले

लंदन, एजेंसी। भगोड़े आर्थिक अपराधी घोषित किए जा चुके कारोबारी विजय माल्या ने एक बार फिर भारत सरकार पर अपने साथ अन्याय करने का आरोप लगाया है। लंदन में रह रहे माल्या ने बुधवार देर रात सोशल मीडिया पर लगातार कई पोस्ट किए। उन्होंने कहा कि उन्हें अब भी अन्याय का सामना करना पड़ रहा है। इसी दौरान उन्होंने लिखा, 'जितने अन्याय मैंने झेले हैं और अब भी झेल रहा हूं, उसे देखते हुए सोचता हूं कि क्या मुझे कॉकरोच बन जाना चाहिए। शायद कॉकरोच की तरफ जिंदगी बेहतर हो।'

14,000 करोड़ की रिकवरी को लेकर माल्या का क्या दावा : विजय माल्या ने प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी की ओर से बॉम्बे हाईकोर्ट में दाखिल एक हलफनामे का हवाला दिया। उनका दावा है कि ईडी ने इसमें स्वीकार

किया था कि उनसे करीब 14,000 करोड़ से ज्यादा की रकम बरामद की गई और 2021 में यह रकम उन बैंकों को दी गई, जिनका पैसा उनके ऊपर बकाया था। विजय माल्या ने कहा कि अगर लोगों को उनकी बात पर भरोसा नहीं है तो वे उनके बयान के बजाय ईडी के अदालत में दिए हलफनामे को देखें। उन्होंने लिखा कि हलफनामे में 2021 में बैंकों को 14,000 करोड़ से ज्यादा दिए जाने की बात कही गई है।

भारत लौटने को लेकर माल्या ने क्या सफाई दी : इससे पहले विजय माल्या ने कहा था कि वह भारत आने से इनकार करने वाले 'भगोड़े' नहीं हैं। उनका दावा है कि वह 1992 से ब्रिटेन के स्थायी निवासी हैं और फिलहाल कानूनी तौर पर ब्रिटेन छोड़ने से रोके गए हैं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की ओर से उनके खिलाफ की गई कार्रवाई के बाद यह पूरा मामला शुरू हुआ। विजय माल्या ने यह भी कहा कि बैंक को पैसा वापस किया जाना उनकी भारत में शारीरिक मौजूदगी पर निर्भर नहीं है। विजय माल्या ने अपनी पोस्ट में एक कथित अकाउंट स्टेटमेंट की तालिका भी साझा की और खुद को गलत तरीके से भगोड़ा बताए जाने का आरोप लगाया। उन्होंने सवाल किया कि क्या उन्हें अब भी उसी तरह पेश किया जाना चाहिए, जबकि उनके मुताबिक बैंकों का पैसा वापस किया जा चुका है। उन्होंने मीडिया कवरेज पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि किसी पत्रकार की खबर की शुरुआत में ही उन्हें 'धोखाधड़ी करने वाला' या 'फ्रॉडस्टर' बताने के बजाय यह पूछा जाना चाहिए कि उन्हें अपना पैसा वापस कब मिलेगा। अक्टूबर 2025 में वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने लोकसभा में बताया था कि भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 के तहत कुल 15 लोगों को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया गया है। इनमें विजय माल्या और नीरव मोदी समेत कई चर्चित नाम शामिल हैं। वहीं, फरवरी 2026 में बॉम्बे हाईकोर्ट ने माल्या को फटकार लगाते हुए कहा था कि वह जानबूझकर अदालत की कार्यवाही से बचते हुए समानता के आधार पर राहत की मांग नहीं कर सकते। शीर्ष अदालत ने उन्हें यह स्पष्ट करने का अंतिम मौका दिया था ।

एंथ्रोपिक-ओपनएआई के रिसर्चर ने दिया इस्तीफा, जनता को किया आगाह

वाशिंगटन, एजेंसी। एंथ्रोपिक और ओपनएआई में तीन साल तक मुख्य एआई मॉडल बनाने वाले 27 वर्षीय रिसर्चर जैकब कॉक्सन ने इस्तीफा दे दिया है। 8 सितंबर को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर की गई एक पोस्ट में उन्होंने चेतावनी दी कि दोनों कंपनियां सुपरइंटेलिजेंस बनाने की अंधी दौड़ में 'हमारे जीवन के साथ जुआ खेल रही' हैं। कॉक्सन ने चेतावनी दी है कि एआई के विकास में शामिल कई अंदरूनी सूत्र मानते हैं कि इस दशक के अंत तक यह मानवता के लिए घातक साबित हो सकता है। उन्होंने इस स्थिति की तुलना मैनहट्टन प्रोजेक्ट से करते हुए कहा कि सैन फ्रांसिस्को के कुछ इंजीनियर्स के हाथों में दुनिया की सबसे खतरनाक तकनीक का भविष्य तय हो रहा है। इस इस्तीफे ने पूरी दुनिया में एआई सुरक्षा और टेक

कंपनियों की पारदर्शिता पर एक नई बहस छेड़ दी है। कॉक्सन के मुताबिक, भले ही एंथ्रोपिक की सेफ्टी टीमें ईमानदारी से काम करना चाहती हैं, लेकिन बाजार की कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण सुरक्षा से जुड़े समझौतों से बचना नामुमकिन हो गया है। दोनों कंपनियों को लगता है कि अगर वे नहीं रुकीं, तो उनका प्रतिद्वंद्वी आगे निकल जाएगा। कॉक्सन ने चेतावनी दी कि एआई जिस रफ्तार से आगे बढ़ रहा है, उससे अगले साल के अंत तक ही ऐसी स्थितियां बन सकती हैं जहां एआई सिस्टम इंसानों के नियंत्रण से पूरी तरह बाहर हो जाएं।

कॉक्सन ने दोनों कंपनियों पर आरोप लगाया कि वे एआई की बेकाबू रफ्तार से जुड़े अपने असली डर को आम जनता से छुपा रही हैं। कॉक्सन का कहना है कि एआई कंपनियां खुद को बेहतर बनाने वाली सुपरइंटेलिजेंस तक जल्दी पहुंचना चाहती हैं। उन्होंने चिंता जताई कि अगर कोई कंपनी पीछे रह गई, तो दूसरी कंपनी पहले ऐसी तकनीक विकसित कर सकती है। इसी डर के कारण कंपनियां जोखिम के बावजूद्द आगे बढ़ रही हैं।

350 से अधिक टेक दिग्गज बता चुके हैं महामारी और परमाणु युद्ध जैसा खतरा : ओपनएआई के सीईओ सैम ऑल्टमैन, गूगल डीपमाइंड के सीईओ डेमिस हसाबिस और एंथ्रोपिक लीईओ डारियो अमोदेई सहित दुनिया के 350 से अधिक शीर्ष टेक लीडर्स ने कहा है एआई के जोखिम को कम करना एक वैश्विक प्राथमिकता होनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे महामारी और परमाणु युद्ध जैसी अन्य सामाजिक स्तर की आपदाओं से निपटने को प्राथमिकता दी जाती है। माइक्रोसॉफ्ट के सह-संस्थापक बिल गेट्स का कहना है कि एआई तकनीक का इस्तेमाल अपराधी या आतंकवादी खतरनाक वायरस या कंप्यूटर वायरस बनाने के लिए कर सकते हैं, जिससे पूरी दुनिया में भारी उथल-पुथल मच सकती है।

कॉक्सन ने कहा कि तकनीक की दौड़ को रोकने के लिए एआई मॉडल की क्षमताएं बढ़ाने पर अस्थायी रोक जैसे कड़े कदमों पर विचार किया जाना चाहिए।

धमाकों से दहले सऊदी और ईरान: पश्चिम एशिया में फिर बढ़ रहा तनाव, डोनाल्ड ट्रंप ने बताया कब खत्म होगा युद्ध

तेहरान, एजेंसी। ईरान के सरकारी प्रसारक 'इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान ब्रॉडकास्टिंग' के अनुसार, सिरिक और मिनाब काउंटी के तटीय इलाकों में बुधवार को लगातार कई धमाकों की आवाजें सुनाई दीं। इन घटनाओं को लेकर होर्मोजगान प्रशासन ने बताया कि केशम में सुनी गई आवाजों का स्रोत समुद्र में पाया गया है। वहीं, आईआरआईबी ने अरब मीडिया के हवाले से बताया कि सऊदी अरब के किंग फहद एयर बेस पर भी कई धमाकों की आवाजें सुनी गईं। इसके अलावा, ईरानी समाचार एजेंसी आईआरएनए ने खबर दी कि सऊदी शहर ताइफ में भी धमाकों की आवाजें सुनी गईं। सऊदी मीडिया के हवाले से आईआरएनए ने कहा कि इलाके में कम से कम दो जोरदार धमाकों की आवाज सुनी गई है। यह घटनाक्रम ऐसे समय में सामने आया है जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को दावा किया कि ईरान के साथ चल रहा युद्ध आगामी अमेरिकी मध्यावधि चुनावों के बाद 'तुरंत' खत्म हो जाएगा। ट्रंप ने तेहरान पर आरोप लगाया कि वह इस उम्मीद में संघर्ष को खींच रहा है कि वाशिंगटन में सत्ता परिवर्तन हो और उसे परमाणु हथियार हासिल करने का मौका मिल सके।

कब खत्म होगा युद्ध : टेक्सास के डलास में रिपब्लिकन मध्यावधि सम्मेलन के लिए रवाना होने से पहले पत्रकारों से बात करते हुए ट्रंप ने कहा कि मुझे लगता है कि चुनाव के तुरंत बाद युद्ध खत्म हो जाएगा। ईरान के पास अब ज्यादा विकल्प नहीं बचे हैं। क्योंकि वे अब और नहीं टिक सकते। वे चुनाव को प्रभावित करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं, ताकि वहां लोगों का एक अच्छा, कमजोर समूह सत्ता में आ सके और हम उन्हें अकेला छोड़ दें और उन्हें अपना परमाणु हथियार हासिल करने दें। वे बस परमाणु हथियार चाहते हैं और अगर उनके पास परमाणु हथियार आ गया, तो पूरी दुनिया बड़ी मुसीबत में पड़ जाएगी।

बातचीत को लेकर ट्रंप ने दिया संकेत : जब ट्रंप से पूछा गया कि क्या उन्हें उम्मीद है कि ईरान के साथ राजनयिक बातचीत फिर से शुरू होगी या सैन्य अभियान दोबारा शुरू किया जाएगा, तो उन्होंने संकेत दिया कि वाशिंगटन फिलहाल बातचीत को लेकर जल्दबाज़ी में नहीं है। हालिया सैन्य अभियानों ने ईरानी सरकार को बुरी तरह कमजोर कर दिया है। किसी भी अंतिम कूटनीतिक समाधान का दायरा पारंपरिक परमाणु समझौतों तक सीमित नहीं होगा।

हूतियों को ईरान का प्रॉक्सी बताने पर बघाई का पलटवार : दूसरी ओर, ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बघाई ने गुरुवार को अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो के उन आरोपों को खारिज कर दिया, जिनमें कहा गया था कि यमन के हूती विद्रोही तेहरान के प्रॉक्सी यानी प्रतिनिधि के तौर पर काम करते हैं। बघाई ने कहा कि हूती समूह स्वतंत्र रूप से काम करता है और किसी से आदेश नहीं लेता। एक्स पर एक पोस्ट में उन्होंने अमेरिका पर अपनी सैन्य मौजूदगी और वर्चस्ववादी नीतियों के जरिए क्षेत्र में अस्थिरता फैलाने का आरोप लगाया। उन्होंने जोर देकर कहा कि यमन में स्थायी शांति स्थापित करने के लिए बाहरी दखलंदाजी को खत्म करना जरूरी है। बघाई ने कहा,'मार्को रुबियो के झूठ तथ्यों की जगह नहीं ले सकते। अंसारुल्लाह यमन का एक स्वतंत्र गुट है, जो अपने फैसले खुद लेता है।

'पुतिन समझौते के लिए तैयार': ट्रंप ने बता दिया कौन डाल रहा अड़ंगा; क्या खत्म होने वाला है रूस-यूक्रेन युद्ध

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ फोन पर हुई बातचीत को 'बहुत अच्छी' बताया है। ट्रंप का दावा है कि पुतिन यूक्रेन युद्ध को खत्म करने के लिए समझौता करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि अगर यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की भी डील के लिए तैयार हैं तो यह अच्छी बात होगी। ट्रंप ने युद्ध की बातचीत में अड़चन के तौर पर पुतिन और जेलेंस्की के बीच दुश्मनी को बताया है।

ट्रंप ने अड़चन के लिए किसे बताया जिम्मेदार : अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा, 'अड़चन दो लोग हैं, जो एक-दूसरे से नफरत करते हैं।' उनका इशारा पुतिन और जेलेंस्की की ओर था। डोनाल्ड ट्रंप का यह बयान ऐसे समय आया है जब अमेरिका रूस और यूक्रेन के बीच बातचीत फिर शुरू कराने की कोशिश कर रहा है। हालांकि, ताजा रिपोर्टों के मुताबिक अभी दोनों पक्षों के बीच किसी अंतिम समझौते पर सहमति नहीं बनी है।

अमेरिकी दूत मॉस्को और कीव पहुंचे, फिर भी क्यों नहीं बनी बात : हाल ही में ट्रंप के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ और उनके दामाद जेरेड कुशनर ने पहले मॉस्को में पुतिन से मुलाकात की और उसके बाद कीव जाकर जेलेंस्की से बातचीत की। मकसद शांति वार्ता को दोबारा पटरी पर लाना था। दोनों मुलाकातों को सकारात्मक और रचनात्मक बताया गया, लेकिन कोई ठोस सफलता सामने नहीं आई।

सबसे बड़ी अड़चन क्या : रूस और यूक्रेन के बीच सबसे बड़े विवादों में से एक यूक्रेन के उन इलाकों का भविष्य है, जिन पर रूस का कब्जा है। रूस डोनेट्स्क के बचे हुए हिस्से समेत क्षेत्रीय मांगों पर अड़ा हुआ है, जबकि जेलेंस्की मौजूदा यूक्रेनी नियंत्रण वाले इलाकों को रूस को सौंपने के खिलाफ हैं। यही वजह है कि बातचीत फिर शुरू करने की कोशिशों के बावजूद समझौते का रास्ता आसान नहीं दिख रहा। कूटनीतिक कोशिशों के साथ जमीन पर लड़ाई और हवाई हमले भी जारी हैं। हालिया रूसी

हमलों में कीव समेत यूक्रेन के कई इलाकों को निशाना बनाया गया है। दूसरी ओर यूक्रेन भी रूस के भीतर लंबी दूरी के ड्रोन हमले कर रहा है। यानी बातचीत की मेज पर शांति की कोशिश चल रही है, लेकिन मोर्चे पर युद्ध अभी थमा नहीं है।

क्या जल्द युद्ध खत्म होने की उम्मीद है : अभी इसे लेकर कोई पक्की समयसीमा नहीं है। अमेरिका बातचीत को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा है और रूस ने भी वार्ता फिर शुरू करने की इच्छा जताई है, लेकिन दोनों पक्षों की मांगों में बड़ा अंतर बना हुआ है। इसलिए ट्रंप का 'डील' वाला दावा महत्वपूर्ण जरूर है, लेकिन इसे अभी शांति समझौता हो जाने के तौर पर नहीं देखा जा सकता।

ईरानी टैंकरों पर हमलों को लेकर क्या बोले ट्रंप : दूसरी ओर, ईरान से जुड़े टैंकरों पर हमलों को लेकर भी ट्रंप ने बड़ा दावा किया। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने ईरान के नौ जहाजों को निशाना बनाया है। ट्रंप ने साफ कहा कि ये हमले अमेरिका की ओर से किए गए हैं और आने वाले समय में ऐसे और हमले देखने को मिल सकते हैं। उन्होंने कहा कि परमाणु मुद्दा बातचीत का हिस्सा जरूर होगा, लेकिन इसके अलावा भी कई दूसरे मुद्दे मेज पर होंगे। ट्रंप के मुताबिक, इनमें से कुछ बातें ऐसी हैं जो तीन महीने पहले बातचीत की मेज पर नहीं थीं। ट्रंप ने कहा, 'मैं सिर्फ परमाणु समझौते से कहीं ज्यादा कर रहा हूं। परमाणु मुद्दे से बहुत कुछ ज्यादा है। परमाणु समझौता होगा, यह 99.9 है, लेकिन मेज पर कई दूसरी चीजें भी होंगी, जो तीन महीने पहले मेज पर नहीं थीं।'

सुप्रीम लीडर के बारे में ट्रंप ने क्या कहा : डोनाल्ड ट्रंप ने आगे कहा कि अगर मैंने जेसीपीओए (जॉइंट कॉम्प्रिहेंसिव प्लान ऑफ एक्शन) को रद्द नहीं किया होता और अगर हमने अपने शानदार बी2 बॉम्बर्स से ईरान पर हमला नहीं किया होता, तो आज उनके पास परमाणु हथियार होता और मैं सुप्रीम लीडर से ऐसे बात कर रहा होता - 'मिस्टर सुप्रीम लीडर सर, आप कैसे हैं' अब मुझे ऐसा नहीं करना है। हम ईरान को परमाणु हथियार हासिल नहीं करने दे सकते।

चुनाव और युद्ध को लेकर ट्रंप का क्या दावा : डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि मुझे लगता है कि चुनाव के तुरंत बाद युद्ध खत्म हो जाएगा। वे चुनाव को प्रभावित करने की कोशिश में बेताब हैं, ताकि वहां अच्छे और कमजोर लोगों का समूह आ जाए और उन्हें अकेला छोड़ दे और उन्हें अपना परमाणु हथियार रखने दिया जाए।

स्वामी,मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौर्या (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सुरक्षा बलों ने प्रतिबंधित संगठनों से जुड़े तीन उग्रवादी को किया गिरफ्तार

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में सुरक्षा बलों ने कई प्रतिबंधित संगठनों से जुड़े तीन उग्रवादियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि इन तीनों उग्रवादियों को गुरुवार को गिरफ्तार किया गया था। तेंगनौपाल जिले के खारो खुल्लेन में एक तलाशी अभियान के दौरान यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट के एक सक्रिय सदस्य को गिरफ्तार किया। उसकी पहचान थौबल जिले के हेइरोक निवासी एन सुरेश सिंह (26) के रूप में हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक असम राइफल्स की सूचना के आधार पर इंफाल पूर्वी जिले के खाबेसोई से पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के एक सक्रिय सदस्य को पकड़ा गया। उसकी पहचान एम सनथोई मेइतेई के रूप में हुई है और वह संगठन के नए सदस्यों की भर्ती करने में शामिल था। इसके अलावा, बिष्णुपुर जिले के कुंबी थाना क्षेत्र के इथाई कुंबी से कांगलेई यावोल कन्ना लुप (केवाईकेएल) के 43 साल के उग्रवादी को गिरफ्तार किया गया है। उसकी पहचान की नाम जानकारी नहीं मिल सकी।

निर्माणाधीन चर्च की छत गिरने से तीन मजदूरों की मौत, 11 घायल

वेल्लोर (एजेंसी)। तमिलनाडु के वेल्लोर जिले में निर्माणाधीन चर्च की छत गिरने से तीन मजदूरों की मौत हो गई और 11 घायल हुए। एक अधिकारी ने बताया कि 11 घायल मजदूरों को अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि कटपाडी के निकट मंडी कृष्णापुरम में 'चर्च ऑफ साउथ इंडिया' के निर्माणाधीन भवन की छत का हिस्सा गुरुवार को उस समय ढह गया, जब मजदूर छत पर कंक्रीट डालने का काम कर रहे थे। अधिकारी ने तीन मजदूरों की मौत की पुष्टि की है। एनडीआरएफ की अरक्कोणम टीम ने जिला प्रशासन, पुलिस और दमकल कर्मियों के साथ मिलकर निर्माण स्थल पर फंसे मजदूरों को बचाने का अभियान चलाया। वेल्लोर की जिलाधिकारी पी एस लीला एलेक्स ने कहा कि कम से कम आठ मजदूरों की हालत स्थिर है।

पंजाब के स्कूलों की कमियां दिखाने पर केजरीवाल ने सीजेपी को सराहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने पंजाब के सरकारी स्कूलों में छात्रों को आ रही समस्याओं को सामने लाने के लिए कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) का धन्यवाद किया है। उन्होंने इन मुद्दों को उठाने के लिए सीजेपी की सराहना कर आश्वासन दिया कि पार्टी राज्य सरकार के साथ मिलकर इन चिंताओं का तुरंत समाधान करने की दिशा में कदम उठाएगी। सीजेपी के सौरव दास के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने पंजाब का दौरा किया, जहाँ उन्होंने अपने स्कूल ठीक करो अभियान के तहत सरकारी स्कूलों की स्थिति का जायजा लिया। दौरे के बाद दास ने बताया कि लुधियाना में स्कूल ऑफ एमिनेंस का रखरखाव अच्छा था, लेकिन कुछ समस्याएं भी देखी गईं। इन समस्याओं से शिक्षा मंत्री हरजोत सिंह बैंस को अवगत कराया गया, जिन्होंने तुरंत मिलने और जल्द कार्रवाई का भरोसा दिया। दास ने स्कूल ऑफ एमिनेंस में स्विमिंग पूल, रैंप, एआई लैब और कंप्यूटर लैब जैसी सुविधाओं की तारीफ की, और कहा कि कई मामलों में ये निजी स्कूलों से भी बेहतर हैं। पंजाब में लगभग 19,000 सरकारी स्कूलों में से, सरकार ने 118 स्कूल ऑफ एमिनेंस बनाने की घोषणा की है, जिसमें से कुछ ही का उद्घाटन हो पाया है। हालांकि, सीजेपी की टीम ने 1936 में बने सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, जंडियाली का भी दौरा किया, जहाँ मरम्मत के बावजूद पुराना ढांचा अभी भी बना हुआ है। दास ने उम्मीद जाहिर की कि इन बच्चों को भी बेहतर सुविधाएं मिलेंगी और पंजाब सरकार इस पर ध्यान देगी।

पीएम मोदी के नेतृत्व में ब्रिक्स में भारत की धमक : सुधांशु त्रिवेदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता और राज्यसभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बीते 12 सालों में भारत ब्रिक्स समूह का अहम और प्रभावशाली सदस्य बनकर उभरा है। राज्यसभा सांसद त्रिवेदी ने बदलते वैश्विक परिदृश्य में इस समूह के महत्व पर जोर दिया, खासकर इसतरह के समय में जब दुनिया के कई हिस्सों में संघर्ष जारी हैं। राज्यसभा सांसद त्रिवेदी ने इस पर गर्व व्यक्त किया कि भारत इस महत्वपूर्ण शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है, और संगठन में देश की स्थिति में आए उल्लेखनीय बदलाव को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि 2014 से पहले, भारत को ब्रिक्स के भीतर एक कमजोर और कम महत्वपूर्ण सदस्य के रूप में देखा जाता था, जिसकी निरंतर भागीदारी पर भी सवाल उठते थे। हालांकि, प्रधानमंत्री मोदी के सशक्त नेतृत्व में, भारत ने अब खुद को एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में स्थापित किया है, जो अन्य ब्रिक्स देशों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग कर रहा है। उन्होंने बताया कि ब्रिक्स समूह दुनिया की करीब आधी आबादी और वैश्विक जीडीपी के करीब 40 प्रतिशत हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे मौजूदा चुनौतियों के बीच इसकी भूमिका और भी अहम होती है। भारत 12 और 13 सितंबर को नई दिल्ली के भारत मंडपम में 18वें ब्रिक्स लीडर्स समिट की मेजबानी कर रहा है।

ब्रिक्स पर कांग्रेस में मतभेद-चिदंबरम के सवाल, थरूर की जमकर तारीफ

नई दिल्ली, एजेंसी।

भारत में हो रहे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से पहले, कांग्रेस के भीतर मुद्दे पर दो सीनियर नेताओं के अलग-अलग बयान सामने आए हैं, इन बयानों ने राजनीतिक गलियारों में नई बहस छेड़ दी है। पूर्व केंद्रीय मंत्री पी.चिदंबरम ने पूछा है कि इस समूह से भारत को क्या ठोस फायदा हुआ है, जबकि कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने ब्रिक्स आयोजन को भारत की कूटनीतिक ताकत और वैश्विक पहुंच का प्रमाण बताया है।

पूर्व केंद्रीय मंत्री चिदंबरम ने अपनी टिप्पणी में कहा कि भारत ब्रिक्स के अलावा जी-20, क्वाड और शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) जैसे कई बहुपक्षीय संगठनों का हिस्सा है, लेकिन इन सभी मंचों से देश को वास्तव में क्या ठोस लाभ मिला है, इस पर विचार होना चाहिए। उन्होंने याद दिलाया कि 2012, 2016 और 2021 में भी ब्रिक्स समिट भारत में आयोजित किए जा चुके हैं। इसके विपरीत, कांग्रेस नेता शशि थरूर ने ब्रिक्स को ग्लोबल साउथ (विकासशील देशों का समूह) के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण मंच बताया। उन्होंने कहा कि 11 सदस्य देशों के प्रमुख नेताओं को एक मंच पर लाना भारत की वैश्विक कूटनीति और दूसरे देशों को साथ लाने की क्षमता को दिखाता है। कांग्रेस नेता थरूर ने बताया कि ब्रिक्स में भारत, रूस, चीन, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका के मूल सदस्य देशों के अलावा अब मिस्र, ईरान, इथियोपिया, यूएई, सऊदी अरब और इंडोनेशिया भी शामिल हैं, जो दुनिया की बड़ी आबादी और लगभग 41 प्रतिशत वैश्विक जीडीपी का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए इस समूह को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। हालांकि, थरूर ने ब्रिक्स के सामने कुछ चुनौतियां भी गिनाईं, जैसे सदस्य देशों के हितों में मतभेद और ईरान-इजराइल व रूस-यूक्रेन जैसे मुद्दों पर आम सहमति का अभाव, जिसके कारण मई में हुई विदेश मंत्रियों की बैठक में साझा बयान जारी नहीं हो सका था। उन्होंने भारत के ब्रिक्स देशों के साथ बढ़ते व्यापार घाटे को भी चिंता का विषय बताया।

आगामी 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन का आयोजन 12-13 सितंबर को नई दिल्ली में होना है। इसमें सभी 11 सदस्य देशों के शीर्ष नेता, जिसमें रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीन के शी जिनपिंग शामिल हैं। सम्मेलन में वैश्विक अर्थव्यवस्था, व्यापार, टेक्नोलॉजी और ऊर्जा जैसे अहम मुद्दों पर चर्चा होगी। इस साल ब्रिक्स की अध्यक्षता भारत कर रहा है और उसका फोकस ग्लोबल साउथ की आवाज मजबूत करने, आर्थिक सहयोग और ऊर्जा सुरक्षा जैसे क्षेत्रों पर है, जिसका उद्देश्य ब्रिक्स को एक व्यापक व्यापार, निवेश और विकास मंच के रूप में बढ़ावा देना है।

कांग्रेस पार्टी के इन विरोधाभासी बयानों पर भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने तुरंत निशाना साधा। बीजेपी प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने कहा कि थरूर का ब्रिक्स समिट को भारत के लिए बड़ी प्रतिष्ठा बताना कांग्रेस के भीतर की अलग-अलग राय को उजागर करता है, जिससे पार्टी में अंदरूनी मतभेद साफ दिखाते हैं।

पश्चिम बंगाल के अलीपुरद्वार में भूकंप के झटके, सुबह-सुबह कांपी धरती

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में शुक्रवार सुबह-सुबह धरती कांपी। अलीपुरद्वार में सुबह 6 बजकर 56 मिनट पर भूकंप के झटके महसूस किए गए, जिससे लोगों की नींद उड़ गई। नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी (एनएससी) के मुताबिक, रिक्टर स्केल पर इस भूकंप की तीव्रता 3.0 मापी गई। इसकी गहराई जमीन के अंदर करीब 9 किलोमीटर थी। भूकंप के झटके महसूस होने के बाद लोगों में हलचल मच गई, हालांकि अभी तक किसी तरह के जानमाल के नुकसान की सूचना नहीं है।

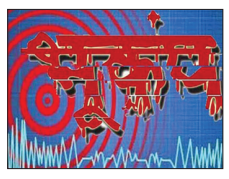

अलीपुरद्वार में आया भूकंप शुक्रवार को भारत में दर्ज हुई भूकंपीय गतिविधियों का हिस्सा था। इससे पहले भी देश के अलग-अलग हिस्सों में धरती हिली। एनएससी के आंकड़ों के अनुसार, शुक्रवार रात 12 बजकर 27 मिनट पर लेह-लद्दाख में 3.7 तीव्रता का भूकंप आया था, जिसकी गहराई करीब 12 किलोमीटर थी। इसके बाद असम में भी भूकंप दर्ज किया गया, शुक्रवार रात 1 बजकर 20 मिनट के आसपास दिमा हसाओ इलाके में 3.1 तीव्रता का भूकंप आया, जिसकी गहराई करीब 39 किलोमीटर थी। यानी शुक्रवार की सुबह तक भारत में कम तीव्रता वाले कई भूकंप दर्ज किए जा चुके थे, जिनमें सबसे ज्यादा तीव्रता 3.7 की लेह-लद्दाख में थी। भारत के बाहर के इलाकों में भी शुक्रवार को भूकंप दर्ज हुए। एनएससी के अनुसार, सुबह 4 बजकर 2 मिनट के आसपास तिब्बत में 3.7 तीव्रता का भूकंप आया, जिसकी गहराई करीब 30 किलोमीटर थी। इसके कुछ समय बाद सुबह 4 बजकर 20 मिनट पर अफगानिस्तान में 3.5 तीव्रता का भूकंप दर्ज किया गया, जिसकी गहराई 163 किलोमीटर थी।

सायोनी ने भाजपा छोड़ी, टीएमसी के बागी सांसदों को झटका

-बंगाल निकाय चुनाव भाजपा अकेले लड़ेगी

कोलकाता, एजेंसी।

पश्चिम बंगाल में नगर निकाय चुनाव होने वाले हैं और भारतीय जनता पार्टी ने तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के बागी सांसदों को बड़ा झटका दिया है। भाजपा ने इन चुनावों में बगैर किसी गठबंधन के अकेले उतरने का फैसला किया है, जिससे टीएमसी से अलग होकर नेशनल सिटिजन्स पार्टी ऑफ इंडिया (एनसीपीआई) में विलय कर चुके बागियों की उम्मीदों पर पानी फिर गया है। संभावनाएं जताई जा रही हैं कि आने वाले दिनों में कोलकाता नगर निगम (केएमसी) और हावड़ा नगर निगम के चुनाव हो सकते हैं। तृणमूल कांग्रेस से अलग होकर एनसीपीआई में शामिल होने वाले बागी सांसदों में सायोनी घोष, काकोली घोष दस्तीदार, यूसुफ पठान और सुदीप बंदोपाध्याय समेत कई बड़े नाम शामिल थे। इन नेताओं को उम्मीद थी कि वे आगामी स्थानीय चुनावों में भाजपा के साथ गठबंधन कर मैदान में उतरेंगे। हालांकि, भाजपा के बंगाल अध्यक्ष शमिक भट्टाचार्य ने इस उम्मीद को तोड़ते हुए कहा, पश्चिम बंगाल में भाजपा का कोई भी गठबंधन साथी नहीं है। हम कोलकाता और हावड़ा नगर निकाय चुनाव अपनी दम पर लड़ेंगे और जीतेंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि दिल्ली में एनसीपीआई के साथ भले ही कोई व्यवस्था हो, लेकिन बंगाल और दिल्ली की राजनीतिक स्थिति अलग है। एक भाजपा नेता ने कहा कि पार्टी पहले अपने ही संगठन, नेताओं और कार्यकर्ताओं पर निर्भर रहना चाहती है, क्योंकि राज्य में सत्ता में आने के बाद यह उनका पहला चुनाव है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि राष्ट्रीय और स्थानीय राजनीति में अंतर होता है, एनसीपीआई के नेता भले ही एनडीए का साथी हों, लेकिन वे पूर्व टीएमसी नेता हैं जिनके खिलाफ भाजपा कार्यकर्ताओं ने संघर्ष किया है, ऐसे में गठबंधन से गलत संदेश जाएगा। इसके बावजूद, बागी सांसद दस्तीदार अभी भी उम्मीद लगाए बैठे हैं। उनका कहना है कि वे भाजपा की अगुवाई वाले एनडीए में सबसे बड़े गठबंधन साथी हैं और निकाय चुनाव गठबंधन के साथी के तौर पर ही लड़ेंगे। उन्होंने कहा कि गठबंधन होने के पूरे आसार हैं। दस्तीदार समेत अधिकांश एनसीपीआई सांसद हाल ही में राजधानी दिल्ली में हुई नेशनल डेमोक्रेटिक अलायंस की बैठक में पहुंचे थे।

सीजेपी का प्लान: अभिजीत दीपके बोले- हमें चुनावों से आगे जाना है

नई दिल्ली, एजेंसी।

कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के लीडर अभिजीत दीपके ने ऐलान किया है कि उनकी पार्टी का मकसद केवल चुनाव लड़ना नहीं, बल्कि उससे आगे बढ़कर समाज में एक बड़ा बदलाव लाना है। हाल ही में एक इंटरव्यू में उन्होंने अमेरिका से भारत लौटने, कॉकरोच आंदोलन और सीजेपी के भविष्य को लेकर अपनी योजनाएं साझा कीं। दीपके ने कहा कि अब जब वे मैदान में उतर गए हैं, तो आंदोलन को जिंदा रखने की हरसंभव कोशिश कर रहे हैं। गौरतलब है कि बीते मई महीने में देश के मुख्य न्यायाधीश की एक टिप्पणी के बाद 30 वर्षीय अभिजीत दीपके ने सोशल मीडिया पर कॉकरोच जनता पार्टी की स्थापना की थी। उन्होंने सोशल मीडिया पर तंज के रूप में यह मुहिम शुरू की थी, लेकिन देखते ही देखते इस आंदोलन से लाखों लोग जुड़ गए और दीपके काफी प्रसिद्ध भी हो गए। बाद में अमेरिका से भारत लौटकर अभिजीत दीपके और उनकी पार्टी ने दिल्ली के जंतर-मंतर पर नीट पेपर लीक के खिलाफ हुए प्रदर्शनों की अगुवाई की थी।

अभिजीत दीपके ने बताया कि उन्हें सरकार की एक बात बहुत खटक गई थी। उन्होंने हालिया इंटरव्यू में कहा कि सरकार की तरफ से देश के लिए खतरा और एंटी नेशनल जैसे टैग मिलने से वे बेहद दुखी थे। हालांकि उनके परिवार और वकील ने उन्हें भारत न जाने की सलाह दी थी, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अमेरिका से भारत लौटने का फैसला किया। दीपके ने कहा, जब मेरी अपनी ही सरकार ने मुझे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बताया, तभी मैंने भारत लौटने का फैसला किया। इस बात ने मुझे बहुत दुख पहुंचाया। मैंने तय किया कि मुझे अपने देश वापस जाना चाहिए ताकि मैं यह साबित कर सकूं कि मैं देश की सुरक्षा के लिए कोई खतरा नहीं हूं। मैं अपने देश से प्यार करता हूं, बस उस तरीके से नहीं, जिस तरीके से सरकार चाहती है। कॉकरोच जनता पार्टी ने पेपर लीक आंदोलन की सफलता के बाद अब स्कूल ठीक करो अभियान शुरू किया है। इस अभियान के तहत सीजेपी के नेता भारत के सरकारी स्कूलों की बदहाली के मुद्दों को प्रमुखता से उठा रहे हैं। अपनी आगे की योजना पूछे जाने पर अभिजीत दीपके ने स्पष्ट किया कि वे इस आंदोलन को किसी पार्टी या चुनावी राजनीति तक सीमित नहीं रखना चाहते। अभिजीत दीपके ने कहा, ÷लोगों ने राजनीति को

सिर्फ चुनाव और राजनीतिक दलों तक सीमित कर दिया है। हम उससे आगे बढ़ना चाहते हैं।÷ उन्होंने आगे कहा कि उनका मकसद एक बड़ा बदलाव लाना है, जहां लोग अपने अधिकार और अपने कर्तव्य समझें, और यह भी जानें कि सत्ता में कोई भी पार्टी आए, उससे जवाबदेही कैसे तय कराई जाए।

तेलंगाना में शुद्धीकरण विवाद : दलित प्रदर्शन के बाद छिड़का हल्दी-दूध

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना की सियासत में एक नया और गंभीर विवाद खड़ा हो गया है, जिसने राज्य में दलितों के कथित अपमान को लेकर पहले से गरमाए राजनीतिक माहौल को और तूल दे दिया है। पूर्व मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव (केसीआर) के एर्रावेली स्थित फार्महाउस के पास कांग्रेस के दलित कार्यकर्ताओं के प्रदर्शन के बाद, कथित तौर पर हल्दी वाला पानी और दूध छिड़ककर शुद्धीकरण करने का मामला सामने आया है। इस घटना के बाद, पुलिस ने तेलंगाना राष्ट्र समिति (बीआरएस) के समर्थकों के खिलाफ सिद्धिपेट जिले के एर्रावेली और वरदराजपुर गांवों में तीन अलग-अलग मामले दर्ज किए हैं। मामले की शुरुआत तेलंगाना विधानसभा स्पीकर जी प्रसाद कुमार को लेकर बीआरएस के दो एमएलसी द्वारा की गई कथित आपत्तिजनक टिप्पणी से हुई थी। इसके विरोध में कांग्रेस के दलित नेताओं और कार्यकर्ताओं ने केसीआर के फार्महाउस की ओर मार्च किया और डप्पू बजाकर अपना विरोध दर्ज कराया। पुलिस के मुताबिक, प्रदर्शनकारियों के चले जाने के बाद कुछ बीआरएस समर्थकों ने सड़कों पर कथित तौर पर हल्दी वाले पानी और दूध का छिड़काव किया। इस कथित शुद्धीकरण को लेकर दायर तीन प्राथमिकी में स्थानीय बीआरएस नेताओं और समर्थकों को आरोपी बनाया गया है। एर्रावेली में बीआरएस नेता बालराजू समेत 10 अन्य लोगों के खिलाफ शिकायत दर्ज हुई, जबकि वरदराजपुर में बीआरएस समर्थक बालामणि, अप्पाला प्रवीण और राजू समेत छह अन्य पर मामला दर्ज किया गया। एक अन्य शिकायत में पावनी गौड़ और आठ अन्य को आरोपी बनाया गया है। इन मामलों में एससी/एसटी अत्याचार निवारण अधिनियम-1989, सिविल राइट्स प्रोटेक्शन एक्ट और भारतीय न्याय संहिता की धारा 196 (समूहों के बीच दुश्मनी बढ़ाना) और 352 (जानबूझकर अपमान कर शांति भंग कराने का इरादा) के तहत कार्रवाई की गई है। बीआरएस ने इन आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए पलटवार किया है। पार्टी ने पुलिस में जवाबी शिकायत दर्ज कराई है और दावा किया है कि कांग्रेस द्वारा शुद्धीकरण का आरोप लगाने के लिए इस्तेमाल की गई तस्वीरें भ्रामक हैं और कथित तौर पर एआइ-जेनरेटेड हैं।

जनगणना 2027 का रोडमैप तैयार: 16 नवंबर से ऑनलाइन स्व-गणना

1 दिसंबर से घर-घर पहुंचेगी टीम

नई दिल्ली, एजेंसी।

जनगणना-2027 की तैयारियां तेजी से चल रही हैं, जिसमें इस बार नागरिकों को अपना ब्योरा स्व-गणना के माध्यम से ऑनलाइन दर्ज करने की सुविधा मिलेगी। यह सुविधा 16 से 30 नवंबर तक उपलब्ध रहेगी। जो परिवार स्व-गणना करेंगे, उन्हें एक पहचान संख्या मिलेगी, जिसे प्रगणक को बताना होगा। 1 दिसंबर 2026 से 4 जनवरी 2027 तक प्रगणक घर-घर जाकर जानकारी दर्ज करेंगे। जनगणना के दौरान जाति और राष्ट्रीयता से जुड़ी जानकारी व्यक्ति की ओर से दी गई सूचना के आधार पर दर्ज की जाएगी। इसके लिए किसी नागरिक से प्रमाणपत्र या अन्य दस्तावेज नहीं मांगा जाएगा। जनगणना के दूसरे चरण में प्रत्येक परिवार से निर्धारित 40 सवाल पूछकर जानकारी दर्ज की जाएगी। घर-घर जनगणना प्रक्रिया के बाद, 5 से 9 जनवरी 2027 तक पुनरीक्षण कार्य होगा।

जनगणना की संदर्भ तिथि 5 जनवरी 2027 की मध्यरात्रि निर्धारित की गई है। औरैया में जिलाधिकारी बृजेश कुमार की अध्यक्षता में हुई जिला स्तरीय जनगणना समन्वय समिति की बैठक में तैयारियों की समीक्षा की गई। बैठक में संबंधित विभागों को समय से सभी व्यवस्थाएं पूरी करने के निर्देश दिए गए। जिले में जनगणना के लिए 50 फील्ड ट्रेनर चिन्हित किए गए हैं, जिन्हें अक्टूबर में मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षित करेंगे। ये फील्ड ट्रेनर 20 नवंबर से पहले प्रगणकों और सुपरवाइजरों को जनगणना प्रक्रिया समझाएंगे। लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए स्कूलों, कॉलेजों और ग्रामीण-शहरी इलाकों में व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। इसमें पेंटिंग, रंगोली, भाषण, निबंध, प्रश्नोत्तरी और प्रभात फेरी जैसी गतिविधियां शामिल होंगी। ग्रामीण और शहरी इलाकों में वॉल पेंटिंग, बैनर-पोस्टर, होर्डिंग, कूड़ा संग्रहण वाहनों और सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली के जरिए भी लोगों को जागरूक किया जाएगा। जिलाधिकारी ने छोटे जागरूकता वीडियो और डिजिटल प्रचार सामग्री तैयार कर सोशल मीडिया के जरिए लोगों तक पहुंचाने के निर्देश दिए हैं। जिलाधिकारी ने जोर दिया कि जनगणना से जुटाए जाने वाले आंकड़े भविष्य की विकास योजनाओं, संसाधनों के वितरण और नीति निर्माण का आधार बनते हैं। उन्होंने सभी विभागों को आपसी समन्वय के साथ तैयारियां समय से पूरी करने को कहा।

राघव चड्ढा ने आप को बताया दिलजला आशिक वोटर लिस्ट विवाद पर तीखी बयानबाजी

चंडीगढ़, एजेंसी।

पंजाब में वोटर लिस्ट में नाम कटने और दिल्ली की वोटर लिस्ट में जुड़ने के बाद भाजपा सांसद राघव चड्ढा और आम आदमी पार्टी (आप) के बीच जुबानी जंग तेज हो गई है। आप की ओर से बेशर्मी का आरोप लगाने के बाद राघव चड्ढा ने पलटवार करते हुए आप को दिलजला आशिक करार दिया है। चड्ढा ने कहा कि जहां तक उनके वोट का सवाल है, आम आदमी पार्टी की ऐसी हालत हो गई है कि उन्हें रात को सपने में मैं भूत बनकर आता हूं। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि आप की हालत उस एक्स गर्लफ्रेंड जैसी है जिसे उसका बॉयफ्रेंड छोड़कर आगे निकल गया हो और अपनी जिंदगी में मूव ऑन कर गया हो। चड्ढा ने आगे कहा, मुझे ऐसा लगता है कि किसी दिन दिल जले आशिक की तरह मेरी याद में अपनी नसें ना काट लें। मुझे उनकी बड़ी चिंता रहती है।

इससे पहले, राघव चड्ढा ने पंजाब की आप सरकार पर राजनीतिक विद्वेष के कारण वोटर लिस्ट में उनका नाम शिफ्टेड कैटेगरी में डालने का आरोप लगाया था। उन्होंने कहा था कि उनके पार्टी छोड़ने के बाद से आप उन्हें लगातार निशाना बना रही है और ऐसा लगता है कि वह अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी को परेशान कर रहे हैं। इस पर आम आदमी पार्टी ने राघव चड्ढा का नाम दिल्ली की वोटर लिस्ट में असामान्य तरीके से जुड़ने पर चुनाव आयोग की प्रक्रिया पर सवाल उठाए। आप की दिल्ली इकाई के प्रमुख सौरभ भारद्वाज ने दावा किया कि 31 अगस्त को जारी ड्राफ्ट वोटर लिस्ट में राजिंदर नगर के संबंधित पोलिंग पार्ट में 746 मतदाता थे, लेकिन बाद में राघव चड्ढा का नाम 747वें मतदाता के तौर पर जुड़ गया। भारद्वाज ने सवाल उठाया कि जब ड्राफ्ट सूची में 746 नाम थे तो उसके बाद 747वां नाम किस प्रक्रिया के तहत जोड़ा गया, और चुनाव आयोग से इस पूरी प्रक्रिया को स्पष्ट करने की मांग की।

आप के प्रवक्ता अनुराग ढांडा ने भी चड्ढा पर हमला बोलते हुए कहा कि चुनाव आयोग के रिकॉर्ड के मुताबिक 26 अगस्त को राघव चड्ढा ने दिल्ली में वोट बनवाने के लिए फॉर्म 6 दाखिल किया और 2 सितंबर को उनका वोट अप्रूव होकर जुड़ गया। ढांडा ने कहा कि 26 अगस्त को दिल्ली में वोट के लिए आवेदन करने और 3 सितंबर को पंजाब सरकार पर वोट कटवाने का आरोप लगाने से राघव चड्ढा और बीजेपी का बेशर्म चेहरा बेनकाब हो गया है।

पीके का पलटवार: बिहार को सम्राट जैसे नेताओं के हाथ में नहीं छोड़ सकता

पटना, एजेंसी।

जन सुराज पार्टी के नेता प्रशांत किशोर ने मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के उन्हें बेचारा कहने वाले बयान पर तीखा पलटवार किया है। प्रशांत किशोर ने कहा है कि वह सम्राट चौधरी जैसे नेताओं के हाथ में बिहार को नहीं छोड़ सकते, इसलिए बिहार को बदलने के उनके संकल्प के सामने कोई चारा नहीं है और बेचारा कहलाने में उन्हें कोई दिक्कत नहीं है। मुख्यमंत्री ने कुछ समय पहले एक साक्षात्कार में प्रशांत किशोर को बेचारा कहा था।

एमएलसी चुनाव की तैयारी के लिए जन सुराज की बैठक के बाद पत्रकारों से बात करते हुए प्रशांत किशोर ने कहा, हम तो बेचारे हैं ही, क्योंकि बिहार को छोड़कर जाने का कोई चारा हमारे पास नहीं है। मुख्यमंत्री ने ठीक ही कहा है। उन्हें किसी ने बेचारा शब्द का शाब्दिक अर्थ नहीं समझाया है। जिसके पास कोई चारा नहीं होता, वही बेचारा कहलाता है। बिहार को सुधारने के संकल्प के अलावा कोई चारा नहीं है। हम सम्राट चौधरी जैसे लोगों के हाथ में बिहार को छोड़कर जा नहीं सकते। इस नजरिए से हम तो बेचारे है हीं। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने अपने साक्षात्कार में प्रशांत किशोर पर पूछे गए सवाल के जवाब में कहा था, वह जो बोल रहे हैं, बोलने दीजिए। बेचारा है, जो करना है करने दीजिए। हम बिहार के लिए काम करने आए हैं। मेरे खिलाफ कुछ है तो कोर्ट में जाएं, कोर्ट तय कर देगा। मेरे खिलाफ लोग सुप्रीम कोर्ट तक लड़ते रहते हैं। मैं व्यक्तिगत राजनीति में विश्वास नहीं रखता। प्रशांत किशोर ने बिहार में बाढ़ की भीषण समस्या के लिए भी राज्य की सरकारों को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा कि पिछले बीस सालों से एनडीए की सरकार होने के बावजूद हर साल बाढ़ से लाखों लोग तबाह होते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सत्ता में बैठे नेताओं और पदाधिकारियों के लिए बाढ़ कमाई का जरिया बनकर रह गई है। यहां बाढ़ से राहत दिलाने की हर योजना में गड़बड़ी की जाती है, चाहे वह बांध बनाने में चोरी हो, बांध टूटने पर उसकी मरम्मत में चोरी हो या बाढ़ फैलने पर राहत कार्य में चोरी। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार में बैठे लोग नहीं चाहते कि राज्य में बाढ़ की समस्या खत्म हो। इसका उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि जल संसाधन विभाग को जनता दल (यूनाइटेड) ने कभी नहीं छोड़ा और यह विभाग लगातार उनके पास रहा है। प्रशांत किशोर के अनुसार, बाढ़ से निजात दिलाने के नाम पर सिर्फ फोटोग्राफी की राजनीति होती है।